नमाज़, दुरूद शरीफ़, इल्मे दीन, तौबा और सलाम की फ़ज़ीलत वग़ैरा पर मुश्तमिल रंग बिरंगे फूलों का गुलदस्ता

40 Faraameene Mustafa (Hindi)

صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم

# 40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

लो मदीने के फूल लाया हूं
मैं ह़दीसे रसूल صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم लाया हूं

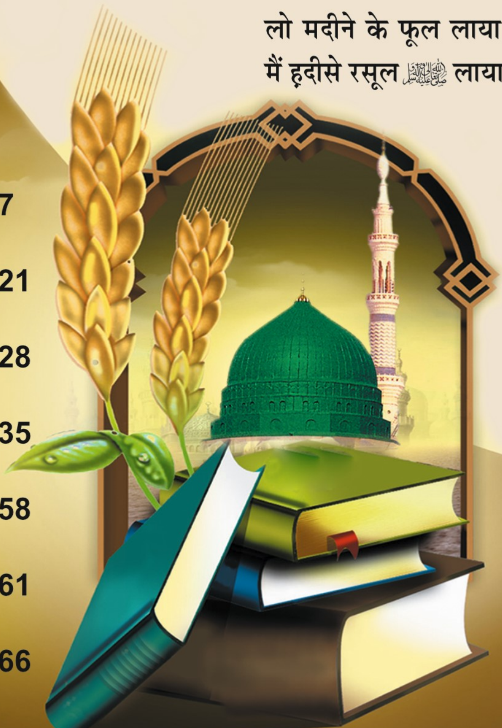


| | |
|---|---|
| कस्रते दुरूद का इन्आ़म | 7 |
| गुनाहों का कफ़्फ़ारा | 21 |
| ग़ैबी मदद | 28 |
| सूदख़ोर की तौबा | 35 |
| चुग़ुल ख़ोर ग़ुलाम | 58 |
| ह़या ईमान से है | 61 |
| फ़ितना बाज़ की मज़म्मत | 66 |

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

# किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

**दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج۱ص۴۰دارالفکر بیروت)

**नोट :** अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

---

## ( 40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा ﷺ )

येह किताब ( **40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा ﷺ** )

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

**राबित़ा : मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
M0. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

नमाज़, दुरूद शरीफ़, इल्मे दीन, तौबा और सलाम की फ़ज़ीलत
वग़ैरा पर मुश्तमिल रंग बिरंगे फूलों का गुलदस्ता

# 40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

पेशकश
**मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी)
**( शो'बए इस्लाही कुतुब )**

**नाशिर**
मक्तबतुल मदीना अह़मदआबाद

# फ़ेहरिस्त


| उ़न्वान | सफ़ह़ा | उ़न्वान | सफ़ह़ा |
|---|---|---|---|
| कु़र्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم | 4 | क़ब्र में आग भड़क उठी ? | 41 |
| कस्रते दुरूद की ता'रीफ़ | 5 | क़ैदख़ाना | 42 |
| कस्रते दुरूद का इन्आ़म | 7 | दुन्या क़ैदख़ाना है | 42 |
| रह़मतों की बरसात | 7 | मिस्कीन का ह़ज | 43 |
| दस रह़मतें | 8 | ह़ज की कु़रबानी | 43 |
| निय्यत की अहम्मिय्यत | 9 | ख़ुश ख़बरी सुनाओ | 48 |
| ख़ुलूसे निय्यत | 10 | 100 अफ़राद का क़ातिल | 49 |
| निय्यत अ़मल से बेहतर है | 12 | सलाम की अहम्मिय्यत | 50 |
| निय्यत का फल | 13 | तकब्बुर का इलाज | 51 |
| ह़ुसूले इ़ल्म की तरग़ीब | 13 | आ'ला ह़ज़रत की आ़दते मुबारका | 51 |
| मदीनए मुनव्वरह से दिमश्क़ का सफ़र | 14 | मस्जिद में हंसने का नुक़्सान | 51 |
| बेहतरीन शख़्स | 14 | क़ह्क़हा की मज़म्मत | 52 |
| इ़ल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ है | 16 | मिस्वाक की फ़ज़ीलत | 53 |
| रिज़्क़ का ज़ामिन | 18 | जमाअ़त की फ़ज़ीलत | 53 |
| राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का मुसाफ़िर | 19 | 25 मर्तबा नमाज़ अदा की | 54 |
| गुनाहों का कफ़्फ़ारा | 21 | नमाज़ की फ़िक्र | 55 |
| दीन की समझ | 21 | चुग़ल ख़ोर की मज़म्मत | 56 |
| नजात का ज़रीआ़ | 24 | चुग़ली किसे कहते हैं ? | 56 |
| बोलने का नुक़्सान | 25 | क्या हम चुग़ली से बचते हैं ? | 57 |
| रहनुमाई की फ़ज़ीलत | 25 | चुग़ली से तौबा | 57 |
| नेकी की दा'वत | 26 | चुग़ल ख़ोर ग़ुलाम | 58 |
| दुआ़ की अहम्मिय्यत | 27 | रज़्ज़ाक़ का करम | 59 |
| दुआ़ बला को टाल देती है | 27 | भुना हुवा हरन | 60 |
| ग़ैबी मदद | 28 | ह़या ईमान से है | 61 |
| धोका देने का नुक़्सान | 30 | बा ह़या नौ जवान | 62 |
| तौबा की बुन्याद | 31 | साक़िये कौसर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का फ़रमान | 64 |
| ताइब की फ़ज़ीलत | 34 | आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का महीना | 64 |
| सच्ची तौबा किसे कहते हैं ? | 34 | शा'बान की तजल्लियात व बरकात | 66 |
| सूदख़ोर की तौबा | 35 | फ़ितना बाज़ की मज़म्मत | 66 |
| नमाज़ की अहम्मिय्यत | 37 | अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत करना | 67 |
| मछली अपनी जगह पर थी | 38 | नमाज़ क़ज़ा करने का वबाल | 69 |
| रौज़ए अक़्दस की ह़ाज़िरी | 38 | कुछ दिन के लिये नमाज़ छोड़ सकते हैं ? | 70 |
| अ़ज़ाबे क़ब्र | 40 | | |

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

# "फ़रामीने मुस्त़फ़ा" के 11 हुरूफ़ की निस्बत से इस रिसाले को पढ़ने की "11 निय्यतें"

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ o या'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(المعجم الكبير للطبرانی، الحديث: ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

**दो मदनी फूल :** ﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾6﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾7﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾8﴿ जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾9﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾10﴿ इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।" (مؤطا امام مالک، ج۲، ص۴۰۷، حديث ۱۷۳۱) पर अ़मल की निय्यत से येह किताब (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾11﴿ इस रिसाले के मुत़ालए़ का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा।

# पहले इसे पढ़ लीजिये

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि **रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, रसूले मुकर्रम, सरापा जूदो करम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई कि उस **इ़ल्म** की ह़द क्या है जहां इन्सान पहुंचे तो **आ़लिम** हो ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''مَنْ حَفِظَ عَلٰی اُمَّتِیْ اَرْبَعِیْنَ حَدِیْثًا فِیْ اَمْرِ دِیْنِھَا بَعَثَہُ اللّٰہُ فَقِیْھًا وَ کُنْتُ لَہٗ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ شَافِعًا وَ شَھِیْدًا'' **या'नी** जो मेरी उम्मत पर चालीस अह़कामे दीन की ह़दीसें ह़िफ़्ज़ करे उसे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़क़ीह उठाएगा और क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ और गवाह होउंगा।'' (مشکوۃ المصابیح، کتاب العلم، الفصل الثالث، الحدیث ۲۵۸، ج ۲ ص ۶۸)

**ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीस के तह़्त लिखते हैं : ''उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं कि हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इस इर्शाद से मुराद व मक़्सूद लोगों तक **चालीस अह़ादीस** का पहुंचाना है। चाहे वोह इसे याद न भी हों और इन का मा'ना भी इसे मा'लूम न हो।'' (اشعۃ اللمعات، ج ۱، ص ۱۸۶)

**मुफ़स्सिरे शहीर** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ''इस ह़दीस के बहुत पहलू हैं, **चालीस ह़दीसें** याद कर के मुसल्मान को **सुनाना**, छाप कर इन में तक़्सीम करना, तरजमा या शर्ह़ कर के लोगों को **समझाना**, रावियों से सुन कर किताबी शक्ल में **जम्अ़ करना** सब ही इस में **दाख़िल** हैं या'नी जो किसी त़रह़ दीनी मसाइल की चालीस ह़दीसें मेरी उम्मत तक पहुंचा दे तो क़ियामत में उस का ह़श्र **उ़लमाए दीन** के ज़ुमरे में होगा और मैं उस की ख़ुसूसी शफ़ाअ़त और उस के ईमान और तक़्वे की **ख़ुसूसी गवाही** दूंगा वरना उ़मूमी शफ़ाअ़त और

गवाही तो हर मुसल्मान को नसीब होगी। इसी ह़दीस की बिना पर क़रीबन तमाम **मुह़द्दिसीन** ने जहां ह़दीसों के दफ़्तर लिखे वहां अ़लाह़िदा चेहल ह़दीस जिसे **अर बईनिय्यह** कहते हैं जम्अ़ कीं।''

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 221)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मज़्कूरा ह़दीसे पाक में बयान कर्दा **फ़ज़ीलत** को ह़ासिल करने के लिये और दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ **40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मुश्तमिल **तह़रीरी गुलदस्ता** तरतीब दिया गया है। जिस में **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बयान करने के बा'द मुस्तनद शुरूह़ाते अह़ादीस से अख़्ज़ कर्दा **वज़ाह़त** भी दर्ज कर दी गई है नीज़ मौज़ूअ़ की मुनासबत से **ह़िकायात** भी नक़्ल की गई हैं। हर ह़दीस का **मुकम्मल ह़वाला** भी दिया गया है। इन अह़ादीस को याद करने की ख़्वाहिश रखने वालों की आसानी के लिये **आख़िरी सफ़ह़ात** में इस रिसाले में शामिल अह़ादीस का **अ़रबी मतन** भी दिया गया है।

**इस** रिसाले को न सिर्फ़ ख़ुद पढ़िये बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों को इस के मुत़ालआ़ की तरग़ीब दे कर **सवाबे जारिया** के मुस्तह़िक़ बनिये। **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ है कि हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** करने के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

**शो'बए इस्लाही कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)**

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

## ह़दीस (1) क़ुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : ''اَوْلَی النَّاسِ بِیْ یَوْمَ الْقِیَامَةِ اَکْثَرُهُمْ عَلَیَّ صَلَاةً **या'नी** बरोज़े क़ियामत लोगों में मेरे **क़रीब तर** वोह होगा, जिस ने दुन्या में मुझ पर **ज़ियादा दुरूदे पाक** पढ़े होंगे ।''

(جامع الترمذي،أبواب الوتر،باب ماجاء في فضل الصلاة على النبى ﷺ،الحديث ٤٨٤،ج٢،ص٢٧)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** क़ियामत में सब से आराम में वोह होगा जो **रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रहे और हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हमराही नसीब होने का ज़रीआ़ **दुरूद शरीफ़** की कसरत है। इस से मा'लूम हुवा कि दुरूदे पाक बेहतरीन नेकी है कि तमाम नेकियों से **जन्नत** मिलती है और इस (या'नी दुरूदे पाक) से बज़्मे **जन्नत के दूल्हा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 100) दुन्या में **दुरूद शरीफ़** की कसरत अ़क़ीदे की मज़्बूती, निय्यत के ख़ुलूस, मह़ब्बत की सच्चाई और इ़बादत की हमेशगी पर दलालत करती है। (فيض القدير،تحت الحديث ٢٢٤٩، ج٢، ص ٥٦٠) लिहाज़ा हमें भी कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये ।

# कस्रते दुरूद शरीफ़ की ता'रीफ़

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** चन्द बुज़ुर्गों के अक्वाल पेश किये जा रहे हैं। आप किसी भी एक बुज़ुर्ग के बताए हुए अ़दद को मा'मूल बना लेंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप का शुमार कसरत से दुरूदो सलाम पढ़ने वालों में हो जाएगा और वोह तमाम बरकात व समरात ह़ासिल हो जाएंगे जिन का अह़ादीसे मुबारका में तज़्किरा है।

**ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی कस्रते दुरूद शरीफ़ की ता'रीफ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : "रोज़ाना कम अज़ कम **1000** मर्तबा दुरूद शरीफ़ ज़रूर पढ़ें वरना **500** पर इक्तिफ़ा करें। बा'ज़ बुज़ुर्गों ने रोज़ाना **300** और बा'ज़ ने नमाज़े फ़ज्र व अ़स्र के बा'द दो दो सो मर्तबा पढ़ने को फ़रमाया है और कुछ सोते वक़्त भी पढ़ने की आ़दत डालें।" आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : "रोज़ाना कम अज़ कम **100** मर्तबा दुरूदो सलाम ज़रूर पढ़ना चाहिये।" फिर मज़ीद फ़रमाते हैं : "बा'ज़ दुरूद शरीफ़ के ऐसे सीग़े हैं (मसलन صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) जिन के पढ़ने से **1000** का अ़दद ब आसानी और जल्द पूरा हो जाता है। उसी को वज़ीफ़ा बना लिया जाए और वैसे भी जो कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने का आ़दी होता है उस पर वोह आसान हो जाता है। ग़रज़े कि जो आ़शिक़े रसूल होता है उसे दुरूदो सलाम पढ़ने से वोह लज़्ज़त व शीरीनी ह़ासिल होती है जो उस की रूह़ को तक़्विय्यत पहुंचाती है।" (जज़्बुल कुलूब (मुतर्जम), स. 328, मुलख़्ख़सन)

***मरीज़े हिज्र को हो जाएगी की अभी तस्कीं***

***ज़रा मदीने के दारुश्शिफ़ा की बात करो***

**ह़ज़रते** अ़ल्लामा मुह़म्मद यूसुफ़ बिन इस्माई़ल नब्हानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى अपनी किताब ''اَفْضَلُ الصَّلَوَاتِ عَلٰى سَيِّدِ السَّادَات'' में फ़रमाते हैं कि अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى ने ''**कश्फ़ुल ग़ुम्मह**'' में बयान किया है कि बा'ज़ उ़लमाए किराम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن फ़रमाते हैं, ''सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ब कसरत दुरूद शरीफ़ की कम अज़ कम ता'दाद हर रात **700** बार और हर दिन **700** बार है।'' मज़ीद लिखते हैं : ''एक बुज़ुर्ग का बयान है : ''कम अज़ कम कसरत रोज़ाना **350** बार दिन में और हर शब में **350** बार है।'' मज़ीद फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते इमाम शा'रानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى ने अपनी किताब ''**अन्वारुल क़ुदसिय्या**'' में फ़रमाया है : ''हम से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़ह्द लिया कि हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर हर दिन और रात ब कसरत दुरूदो सलाम पढ़ा करेंगे और अपने भाइयों के आगे इस का अज्रो सवाब बयान किया करेंगे और आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इज़्हारे मह़ब्बत के लिये उन्हें पूरी तरग़ीब देंगे और येह कि हम हर दिन और रात और सुब्ह़ और शाम **1000** से ले कर **10,000** तक दुरूदो सलाम का विर्द करेंगे।'' अ़ल्लामा नब्हानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى मज़ीद फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते शैख़ नूरुद्दीन शौनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى रोज़ाना **10,000** बार दुरूदो सलाम पढ़ते थे और शैख़ अह़मद ज़वावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى रोज़ाना **40,000** बार दुरूद शरीफ़ पढ़ते थे।'' (افضل الصلوات علی سید السادات،الفصل الرابع،ص ۳۰/۳۱)

**ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने शैख़े अजल अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से दुरूदे पाक की ता'दाद दरयाफ़्त की तो फ़रमाया कि ''इस की कोई

ता'दाद मुअ़य्यन नहीं है, जितना हो सके पढ़ो, इसी से **रत़्बुल्लिसान** रहो (या'नी अपनी ज़बान तर रखो) और इसी के रंग में रंग जाओ।"

(مدارج النبوۃ،باب نہم ذکر حقوق آنحضرت ﷺ،ج۱،ص۳۲۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## कस्रते दुरूद का इन्आ़म

**ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ अह़मद बिन मन्सूर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفُوْر जब फ़ौत हुए तो अहले शीराज़ में से किसी ने ख़्वाब में देखा कि वोह शीराज़ की जामेअ़ मस्जिद के मेह़राब में खड़े हैं और उन्हों ने **बेहतरीन ह़ुल्ला** (जन्नती लिबास) ज़ैबे तन किया हुवा है और सर पर **मोतियों वाला ताज** सजा हुवा है। ख़्वाब देखने वाले ने अ़र्ज़ की : "ह़ज़रत ! क्या ह़ाल है ?" फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला ने मुझे **बख़्श** दिया और मुझ पर **करम** फ़रमाया और मुझे ताज पहना कर **जन्नत** में दाख़िल किया।" पूछा : "किस सबब से ?" फ़रमाया : "मैं **ताजदारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर **कसरत से दुरूदे पाक** पढ़ा करता था येही अ़मल काम आ गया।" (القول البدیع،الباب الثانی فی ثواب الصلاۃ علی رسول ﷺ......الخ،ص۲۵۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (2) रह़मतों की बरसात

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "صَلُّوْا عَلَیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکُمْ **या'नी** मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह तआ़ला तुम पर **रह़मत** भेजेगा।"

(الکامل في ضعفاء الرجال،رقم الترجمۃ ۱۱۴۱، ج۵،ص۵۰۵)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सलात** के मा'ना हैं रह़मत या त़लबे रह़मत, जब इस का फ़ाइ़ल (या'नी करने वाला) रब (عَزَّوَجَلَّ) हो तो (**सलात**) ब मा'ना रह़मत होती है और फ़ाइ़ल जब बन्दे हों तो ब मा'ना त़लबे रह़मत। इस्लाम में एक नेकी का बदला कम अज़ कम दस गुना है। ख़याल रहे कि बन्दा अपनी ह़ैसिय्यत के लाइक़ दुरूद शरीफ़ पढ़ता है मगर रब तआ़ला अपनी शान के लाइक़ उस पर रह़मतें उतारता है जो बन्दे के ख़याल व गुमान से **वरा** (या'नी बुलन्द) है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 97, 98)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

## ह़दीस (3) दस रह़मतें

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है :

"مَنْ صَلّٰی عَلَیَّ وَاحِدَۃً صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ عَشْرَ صَلَوٰتٍ وَحُطَّتْ عَنْہُ عَشْرُ خَطِیَّاتٍ وَرُفِعَتْ لَہٗ عَشْرُ دَرَجَاتٍ"

**या'नी** जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा, अल्लाह तआ़ला उस पर **दस रह़मतें** भेजेगा और उस के **दस गुनाह** मुआ़फ़ किये जाएंगे और उस के **दस दरजे** बुलन्द किये जाएंगे।"

(مشکوۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث ۹۲۲، ج۱، ص۱۸۹)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा कि एक दुरूदे पाक में तीन फ़ाएदे हैं। **दस** रह़मतें, **दस** गुनाहों की मुआ़फ़ी और **दस** दरजों की बुलन्दी। (مراٰۃ المناجیح، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ج۲، ص۱۰۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

## ह़दीस (4) निय्यत की अहम्मिय्यत

**अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّیَّاتِ** **या'नी** आ'माल का दारो मदार **निय्यतों** पर है।"

(صحیح البخاری،کتاب بدء الوحی،باب کیف کان بدء الوحی،الحدیث ۱،ص ۱)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि आ'माल का सवाब निय्यत पर ही है, बिग़ैर निय्यत किसी अ़मल पर सवाब का **इस्तिह़्क़ाक़** (या'नी ह़क़) नहीं। **आ'माल** अ़मल की जम्अ़ है और इस का इत़्लाक़ आ'ज़ा, ज़बान और दिल तीनों के अफ़्आ़ल पर होता है और यहां आ'माल से मुराद आ'माले सालिह़ा (या'नी नेक आ'माल) और मुबाह़ (या'नी जाइज़) अफ़्आ़ल हैं। और **निय्यत** लुग़वी त़ौर पर दिल के पुख़्ता इरादे को कहते हैं और शरअ़न इ़बादत के इरादे को निय्यत कहा जाता है। इ़बादात की दो क़िस्में हैं :

**(1) मक़्सूदा :** जैसे नमाज़, रोज़ा कि इन से मक़्सूद ह़ुसूले सवाब है इन्हें अगर बिग़ैर निय्यत अदा किया जाए तो येह सह़ीह़ न होंगे इस लिये कि इन से मक़्सूद सवाब था और जब सवाब मफ़्क़ूद हो गया तो इस की वजह से अस्ल शै ही अदा न होगी।

**(2) ग़ैर मक़्सूदा :** वोह जो दूसरी इ़बादतों के लिये ज़रीआ़ हों जैसे नमाज़ के लिये चलना, वुज़ू, ग़ुस्ल वग़ैरा। इन इ़बादाते ग़ैर मक़्सूदा को अगर कोई निय्यते इ़बादत के साथ करेगा तो उसे सवाब मिलेगा और

अगर बिला निय्यत करेगा तो सवाब नहीं मिलेगा मगर इन का ज़रीआ़ या वसीला बनना अब भी दुरुस्त होगा और इन से नमाज़ सह़ीह़ हो जाएगी । (ماخوذ از نزهة القاری شرح صحیح البخاری، ج۱، ص۲۲۶)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** एक अ़मल में जितनी निय्यतें होंगी उतनी नेकियों का सवाब मिलेगा, मसलन मोह़ताज क़राबत दार की मदद करने में अगर निय्यत फ़क़त़ **लि वज्हिल्लाह** (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये) देने की होगी तो एक निय्यत का सवाब पाएगा और अगर सिलए रेह़मी की निय्यत भी करेगा तो दोहरा सवाब पाएगा । (اشعة اللمعات، ج ١، ص ٣٦)
**इसी** त़रह़ मस्जिद में नमाज़ के लिये जाना भी एक अ़मल है इस में बहुत सी निय्यतें की जा सकती हैं, इमामे अहले सुन्नत शाह **मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़तावा रज़विय्या जिल्द 5 सफ़ह़ा 673 में इस के लिये चालीस निय्यतें बयान कीं और फ़रमाया : "बेशक जो इ़ल्मे निय्यत जानता है एक एक फ़े'ल को अपने लिये कई कई नेकियां कर सकता है ।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 5, स. 673)

बल्कि मुबाह़ कामों में भी अच्छी निय्यत करने से सवाब मिलेगा, मसलन ख़ुश्बू लगाने में इत्तिबाए़ सुन्नत, ता'ज़ीमे मस्जिद, फ़रह़ते दिमाग़ और अपने इस्लामी भाइयों से ना पसन्दीदा बू दूर करने की निय्यतें हों तो हर निय्यत का अलग सवाब होगा । (اشعة اللمعات، ج۱، ص۳۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ख़ुलूसे निय्यत

**ह़ज़रते** सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار दिमश्क़ में मुक़ीम थे और **ह़ज़रते** सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की

तय्यार कर्दा मस्जिद में ए'तिकाफ़ किया करते थे। एक मर्तबा उन के दिल में ख़याल आया कि कोई ऐसी सूरत पैदा हो जाए कि मुझे इस मस्जिद का **मुतवल्ली** (या'नी इन्तिज़ाम संभालने वाला) बना दिया जाए। चुनान्चे आप ने ए'तिकाफ़ में इज़ाफ़ा कर दिया और इतनी कसरत से नमाज़ें पढ़ीं कि हमा वक़्त नमाज़ में मश्ग़ूल देखे जाते। लेकिन किसी ने आप की त़रफ़ तवज्जोह नहीं की। एक साल इसी त़रह़ गुज़र गया। एक मर्तबा आप मस्जिद से बाहर आए तो निदाए ग़ैबी आई : **"ऐ मालिक ! तुझे अब तौबा करनी चाहिये।"** येह सुन कर आप को एक साल तक अपनी ख़ुद ग़रज़ाना इ़बादत पर शदीद रन्ज व शरमिन्दगी हुई और आप अपने क़ल्ब को रिया से ख़ाली कर के **ख़ुलूसे निय्यत** के साथ सारी रात इ़बादत में मश्ग़ूल रहे।

**सुब्ह़** के वक़्त मस्जिद के दरवाज़े पर लोगों का एक मज्मअ़ मौजूद था, और लोग आपस में कह रहे थे कि "मस्जिद का इन्तिज़ाम ठीक नहीं है लिहाज़ा इसी शख़्स को **मुतवल्ली** बना दिया जाए और तमाम इन्तिज़ामी उमूर इस के सिपुर्द कर दिये जाएं।" सारा मज्मअ़ इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो कर आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار के पास पहुंचा और आप के नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द उन्हों ने आप से अ़र्ज़ की, कि "हम बाहमी त़ौर पर किये गए मुत्तफ़िक़ा फ़ैसले से आप को मस्जिद का **मुतवल्ली** बनाना चाहते हैं।" आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह !** मैं एक साल तक रियाकाराना इ़बादत में इस लिये मश्ग़ूल रहा कि मुझे मस्जिद की **तौलियत** ह़ासिल हो जाए मगर ऐसा न हुवा अब जब कि मैं सिदक़े दिल से तेरी इ़बादत में मश्ग़ूल हुवा तो तमाम लोग मुझे **मुतवल्ली** बनाने आ पहुंचे और मेरे

ऊपर येह बार डालना चाहते हैं, लेकिन मैं तेरी अ़ज़्मत की क़सम खाता हूं कि मैं न तो अब तो तौलियत क़बूल करूंगा और न मस्जिद से बाहर निकलूंगा।'' येह कह कर फिर इ़बादत में मश्ग़ूल हो गए।

(تذکرۃ الاولیاء، باب چہارم، ذکر مالک بن دینار رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ، ج۱ص ۴۸، ۴۹)

**मदीना :** अच्छी अच्छी निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा केसिट बयान "**निय्यत का फल**" और निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा **कार्ड** या **पेम्फ़लेट मक्तबतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमाएं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ह़दीस (5) निय्यत अ़मल से बेहतर है

**ह़ज़रते** सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिलकुशा है : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ **या'नी** मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से **बेहतर** है।''

(المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٥٩٤٢، ج٦، ص١٨٥)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बन्दे को अच्छी निय्यत पर वोह **इन्आ़मात** दिये जाते हैं जो अच्छे अ़मल पर भी नहीं दिये जाते क्यूं कि निय्यत में **रियाकारी** नहीं होती।''

(الزّواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة الثانية، باب الشرك الاصغر وهو الرياء، ج١، ص٧٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## निय्यत का फल

**बनी इस्राईल** का एक शख़्स क़हत़ साली में रैत के एक टीले के पास से गुज़रा। उस ने दिल में सोचा कि **अगर येह रैत ग़ल्ला होती तो मैं इसे लोगों में तक़्सीम कर देता।** इस पर **अल्लाह** तआला ने उन के नबी عَلَيْهِ السَّلام की त़रफ़ वह्य भेजी कि उस से फ़रमाएं कि **अल्लाह** तआला ने तुम्हारा सदक़ा क़बूल कर लिया और तेरी अच्छी निय्यत के बदले में **उस टीले के ब क़दर ग़ल्ला सदक़ा करने का सवाब दिया।**

(احياء العلوم، كتاب النية والاخلاص، ج٥، ص٨٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تعالىٰ على محمّد

## ह़दीस (6) ह़ुसूले इ़ल्म की तरग़ीब

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللهُ تَعالىٰ عَنْهُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعالىٰ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहबर निशान है : '' **اُطْلُبُوا الْعِلْمَ وَلَوْ بِالصِّيْنِ** **या'नी** इ़ल्म ह़ासिल करो अगर्चे तुम्हें चीन जाना पड़े।''

(شعب الإيمان، باب في طلب العلم، الحديث: ١٦٦٣، ج٢، ص٢٥٤)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस (ह़दीसे पाक) से इ़ल्मे दीन की बे इन्तिहा अहम्मिय्यत साबित होती है कि उस ज़माने में जब कि हवाई जहाज़, रेल और मोटर नहीं थे, अ़रब से मुल्के चीन पहुंचना कितना मुश्किल काम था मगर रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعالىٰ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमा रहे हैं कि अगर्चे तुम को अ़रब से मुल्के चीन जाना पड़े लेकिन इ़ल्मे दीन ज़रूर ह़ासिल करो इस से ग़फ़्लत हरगिज़ न बरतो। (इ़ल्म और उ़लमा, स. 33)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تعالىٰ على محمّد

## मदीनतुल मुनव्वरह से दिमश्क़ का सफ़र

**ह़ज़रते** सय्यिदुना कसीर बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ दिमश्क़ की मस्जिद में बैठा था तो एक आदमी ने आ कर कहा : ''ऐ अबू दरदा ! बेशक मैं ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शह्र मदीनए त़य्यिबा से येह सुन कर आया हूं कि आप के पास कोई ह़दीस है जिसे आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं और मैं किसी **दूसरे काम** के लिये नहीं आया हूं।'' ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा कि मैं ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि ''जो शख़्स इ़ल्म (दीन) ह़ासिल करने के लिये सफ़र करता है तो ख़ुदा तआ़ला **उसे जन्नत के रास्तों में से एक रास्ते पर चलाता है** और त़ालिबे इ़ल्म की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये **फ़िरिश्ते अपने परों को बिछा देते हैं** और हर वोह चीज़ जो आस्मान व ज़मीन में है यहां तक कि मछलियां पानी के अन्दर आ़लिम के लिये **दुआ़ए मग़्फ़िरत** करती हैं और **आ़लिम की फ़ज़ीलत** आ़बिद पर ऐसी है जैसी चौदहवीं रात के चांद की फ़ज़ीलत सितारों पर, और उ़लमा **अम्बियाए किराम** عَلَیْہِمُ السَّلام के **वारिस व जा नशीन** हैं। अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلام का तर्का दीनार व दिरहम नहीं हैं। उन्हों ने वरासत में सिर्फ़ **इ़ल्म** छोड़ा है तो जिस ने इसे ह़ासिल किया उस ने पूरा ह़िस्सा पाया।''

(سنن ابوداوٗد، کتاب العلم، باب الحث علی طلب العلم، الحدیث ۳٦٤١، ج۳، ص٤٤٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (7) बेहतरीन शख़्स

**ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि

शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَهٗ **या'नी** तुम में **बेहतरीन** शख़्स वोह है, जिस ने क़ुरआन को **सीखा** और दूसरों को **सिखाया**।''

(صحیح البخاري،کتاب فضائل القرآن،باب خیر کم ...الخ،الحدیث۵۰۲۷،ج۳،ص ۴۱۰)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** क़ुरआन सीखने सिखाने में बहुत वुस्अ़त है, बच्चों को क़ुरआन के हिज्जे सिखाना, क़ारी साहिबान का तज्वीद सीखना सिखाना, उ़लमाए किराम का क़ुरआनी अह़काम ब ज़रीअ़ए ह़दीस व फ़िक़्ह सीखना सिखाना, सूफ़ियाए किराम का असरार व रुमूज़े क़ुरआन ब सिल्सिलए त़रीक़त सीखना सिखाना सब क़ुरआन ही की ता'लीम है। सिर्फ़ अल्फ़ाज़े क़ुरआन की ता'लीम मुराद नहीं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 217)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के तह़त **क़ुरआने पाक** की ता'लीमात को आ़म करने के लिये अन्दरून मुल्क हि़फ़्ज़ो नाज़िरा के ला ता'दाद मदारिस बनाम **''मद्रसतुल मदीना''** क़ाइम हैं। मुल्क में **हज़ारों** मदनी मुन्ने और मदनी मुन्नियों को हि़फ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जा रही है। इसी त़रह़ मुख़्तलिफ़ मसाजिद वग़ैरा में उ़मूमन बा'द नमाज़े इशा हज़ारहा **मद्रसतुल मदीना** बालिग़ान की तरकीब होती है जिन में बड़ी उ़म्र के इस्लामी भाई सह़ीह़ मख़ारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ क़ुरआने करीम सीखते और दुआ़एं याद करते, नमाज़ें वग़ैरा दुरुस्त करते और सुन्नतों की ता'लीम मुफ़्त ह़ासिल करते हैं। इलावा अज़ीं दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में अक्सर घरों के अन्दर तक़रीबन रोज़ाना हज़ारों मदारिस

बनाम **मद्रसतुल मदीना** (बराए बालिग़ात) भी लगाए जाते हैं जिन में इस्लामी बहनें क़ुरआने पाक, नमाज़ और सुन्नतों की मुफ़्त ता'लीम पातीं और दुआ़एं याद करती हैं। शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा **मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के जज़्बात येह हैं :

*येही है आरज़ू ता'लीमे क़ुरआं आ़म हो जाए*
*तिलावत करना सुब्ह़ो शाम मेरा काम हो जाए*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (8) इ़ल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ है

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "**طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِیْضَةٌ عَلٰی کُلِّ مُسْلِمٍ** **या'नी** इ़ल्म का ह़ासिल करना हर मुसल्मान मर्द (व औ़रत) पर **फ़र्ज़** है।"

(شعب الإيمان،باب في طلب العلم، الحديث: ١٦٦٥، ج٢، ص٢٥٤)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हर मुसल्मान मर्द औ़रत पर इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ है, (यहां) इ़ल्म से ब क़दरे ज़रूरत शरई मसाइल मुराद हैं लिहाज़ा रोज़े नमाज़ के मसाइले ज़रूरिय्या सीखना **हर मुसल्मान** पर फ़र्ज़, है़ज़ व निफ़ास के ज़रूरी मसाइल सीखना **हर औ़रत** पर, तिजारत के मसाइल सीखना **हर ताजिर** पर, ह़ज के मसाइल सीखना **ह़ज** को जाने वाले पर ऐ़न **फ़र्ज़** हैं लेकिन दीन का पूरा **आ़लिम** बनना फ़र्ज़े किफ़ाया कि अगर शह्र में एक ने अदा कर दिया तो सब बरी हो गए।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 202)

**शैखे़ त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी

ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने एक मक्तूब में लिखते हैं : **''मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अफ़्सोस ! आज कल सिर्फ़ व सिर्फ़ दुन्यावी उ़लूम ही की त़रफ़ हमारी अक्सरिय्यत का रुजह़ान है । इल्मे दीन की त़रफ़ बहुत ही कम मैलान है । **ह़दीसे पाक** में है : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ . **या'नी** इ़ल्म का त़लब करना हर मुसल्मान मर्द (व औ़रत) पर फ़र्ज़ है । (سنن ابن ماجه ج١ ص ١٤٦ حديث ٢٢٤) इस ह़दीसे पाक के तह़्त मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने जो कुछ फ़रमाया, इस का आसान लफ़्ज़ों में मुख़्तसरन ख़ुलासा अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं । सब में अव्वलीन व अहम तरीन फ़र्ज़ येह है कि **बुन्यादी अ़क़ाइद** का इ़ल्म ह़ासिल करे । जिस से आदमी सह़ीह़ुल अ़क़ीदा सुन्नी बनता है और जिन के इन्कार व मुख़ालफ़त से **काफ़िर** या **गुमराह** हो जाता है । इस के बा'द मसाइले **नमाज़** या'नी इस के फ़राइज़ व शराइत़ व मुफ़्सिदात (या'नी नमाज़ तोड़ने वाली चीज़ें) सीखे ताकि नमाज़ सह़ीह़ त़ौर पर अदा कर सके । फिर जब **रमज़ानुल मुबारक** की तशरीफ़ आवरी हो तो रोज़ों के मसाइल, मालिके निसाबे नामी (या'नी ह़क़ीक़तन या ह़ुक्मन बढ़ने वाले माल के निसाब का मालिक) हो जाए तो **ज़कात** के मसाइल, साह़िबे इस्तित़ाअ़त हो तो मसाइले **ह़ज, निकाह़** करना चाहे तो इस के ज़रूरी मसाइल, **ताजिर** हो तो ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल, **मुज़ारेअ़** या'नी काश्तकार (व ज़मीन दार) पर खेती बाड़ी के मसाइल, **मुलाज़िम** बनने और मुलाज़िम रखने वाले पर इजारा के मसाइल । وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس (या'नी और इसी पर क़ियास

करते हुए) **हर मुसल्मान आ़क़िल व बालिग़ मर्द व औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है ।** इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले **ह़लाल** व **ह़राम** भी सीखना **फ़र्ज़** है । नीज़ **मसाइले क़ल्ब** (बात़िनी मसाइल) या'नी **फ़राइज़े क़ल्बिया** (बात़िनी फ़राइज़) मसलन **आ़जिज़ी** व **इख़्लास** और **तवक्कुल** वग़ैरहा और इन को ह़ासिल करने का त़रीक़ा और **बात़िनी गुनाह** मसलन **तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद** वग़ैरहा और **इन का इलाज** सीखना हर मुसल्मान पर अहम फ़राइज़ से है ।" (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 623, 624)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (9) रिज़्क़ का ज़ामिन

**ह़ज़रते** सय्यिदुना ज़ियाद बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "مَنْ طَلَبَ الْعِلْمَ تَکَفَّلَ اللّٰہُ لَہٗ بِرِزْقِہٖ **या'नी** जो शख़्स त़लबे इ़ल्म में रहता है, अल्लाह तआ़ला उस के रिज़्क़ का **ज़ामिन** है ।" (تاریخ بغداد، رقم: ۱۵۳۵، ج۳، ص۳۹۸)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह** तआ़ला त़ालिबे इ़ल्म को ख़ास त़ौर पर ऐसे ज़रीए से **रिज़्क़** अ़त़ा करेगा कि उस का गुमान भी न होगा, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ । लिहाज़ा त़ालिबुल इ़ल्म को चाहिये कि अपने रब ही पर **तवक्कुल** करे और थोड़े खाने और कम लिबास पर **क़नाअ़त** करे । इमाम मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق फ़रमाते हैं : जो **फ़क्र** पर राज़ी न होगा तो उसे उस का मत़्लूब या'नी **इ़ल्म** न मिल सकेगा ।

(فیض القدیر، تحت الحدیث ۸۸۳۸، ج ۶، ص ۲۲۸، ملخّصًا)

**फ़िक्हे ह़नफ़ी** के अ़ज़ीम पेशवा इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के होन्हार शागिर्द इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने जब इमामे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की शागिर्दी इख़्तियार की तो आप माली तौ़र पर ज़बूं ह़ाली का शिकार थे। लेकिन आप ने हिम्मत न हारी और मुसल्सल इ़ल्म ह़ासिल करते रहे और आख़िरे कार फ़िक़्हे ह़नफ़ी के इमाम कहलाए।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (10) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का मुसाफ़िर

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : '' مَنْ خَرَجَ فِیْ طَلَبِ الْعِلْمِ فَهُوَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ حَتّٰی یَرْجِعَ **या'नी** जो शख़्स त़लबे इ़ल्म के लिये घर से निकला, तो जब तक वापस न हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की **राह** में है।''

(جامع الترمذي، ابوابُ العلم، باب فضل طلب العلم، الحديث ٢٦٥٦، ج٤، ص٢٩٥)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जो कोई मस्अला पूछने के लिये अपने घर से या इ़ल्म की **जुस्त्जू** में अपने वत़न से उ़लमा के पास गया वोह भी **मुजाहिदे फ़ी सबीलिल्लाह** (या'नी राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करने वाले की त़रह़) है। ग़ाज़ी की त़रह़ घर लौटने तक उस का सारा वक़्त और ह़रकत **इ़बादत** होगी। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 203)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## सीखने के लिये सफ़र करना बुज़ुर्गों की सुन्नत है

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** यक़ीनन इ़ल्म ह़ासिल करने के

लिये सफ़र करना बुज़ुर्गाने दीन की सुन्नत है। और वोह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या तो उस कठिन दौर में इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये सफ़र करते थे जब सफ़र ऊंट पर, घोड़े पर या पैदल किया जाता था। और मन्ज़िल तक पहुंचने में कई रोज़ और कभी कभी कई माह सर्फ़ हो जाते थे। जब कि आज कल तो महीनों का सफ़र दिनों में और दिनों का सफ़र घन्टों में तै़ हो जाता है। उस दौर में इस क़दर दुश्वारियां होने के बा वुजूद लोगों में जज़्बा था कि वोह राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करते थे। और सुन्नतों के रास्ते में आने वाली हर तक्लीफ़ को ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त कर लेते थे। मगर अफ़्सोस! आज ह़ालां कि सफ़र करना निहायत ही आसान हो चुका है। फिर भी इस आसानी से फ़ाएदा उठाने के लिये कोई तय्यार नहीं। हां! ह़ुसूले दुन्या के लिये इस आसानी का पूरा पूरा फ़ाएदा उठाया जाता है। दौलत कमाने के लिये लोग हज़ारों मीलों का सफ़र तै़ कर के न जाने कहां कहां पहुंच जाते हैं। माल कमाने की ग़रज़ से मां बाप, बीवी बच्चों सब से फ़ुरक़त और जुदाई गवारा कर लेते हैं। ख़ूब कमाते हैं, बेंक बेलेन्स बढ़ाते हैं, ख़ूब ख़ुश होते हैं, हर वक़्त मालो दौलत के ढेर के सुहाने सपने देखते रहते हैं, दौलत बढ़ाने की नई नई तरकीबें सोचते रहते हैं। शबो रोज़ माल ही के जाल में फंसे रहते हैं। आह! ह़ुब्बे माल में हर एक आज सफ़र करने के लिये बे क़रार और सर धड़ की बाज़ी लगा देने के लिये तय्यार नज़र आता है। इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये **नेकी की दा'वत** पेश करने के लिये कौन अपने घर से निकले। आह! सद आह!

*वोह मर्दे मुजाहिद नज़र आता नहीं मुझ को*
*हो जिस के रगो पै में फ़क़त़ मस्तिये किरदार*

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ! दा'वते इस्लामी**

के **मदनी क़ाफ़िले** क़र्या ब क़र्या गाउं ब गाउं, मुल्क ब मुल्क **3** दिन, **12** दिन, **30** दिन और **12** माह के लिये **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करते रहते हैं। हमें चाहिये कि **अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश** के लिये **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लें।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

## ह़दीस (11) गुनाहों का कफ़्फ़ारा

**ह़ज़रते** सय्यिदुना **सख़्बरह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : ''**مَنْ طَلَبَ الْعِلْمَ كَانَ كَفَّارَةً لِّمَا مَضٰى** **या'नी** जो शख़्स इ़ल्म त़लब करता है, तो येह उस के गुज़श्ता गुनाहों का **कफ़्फ़ारा** है।''

(جامع الترمذي، ابواب العلم، باب فضل طلب العلم، الحديث ٢٦٥٧، ج٤،ص٢٩٥)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** त़ालिबे इ़ल्म से सग़ीरा गुनाह (उसी त़रह़) मुआ़फ़ हो जाते हैं जैसे वुज़ू नमाज़ वग़ैरा इ़बादात से, लिहाज़ा इस का मत़्लब येह नहीं है कि त़ालिबे इ़ल्म जो गुनाह चाहे करे। या (इस ह़दीस का) मत़्लब येह है कि **अल्लाह** तआ़ला निय्यते ख़ैर से इ़ल्म त़लब करने वालों को गुनाहों से बचने और गुज़श्ता गुनाहों का **कफ़्फ़ारा** अदा करने की तौफ़ीक़ देता है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 203)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

## ह़दीस (12) दीन की समझ

**ह़ज़रते** सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "مَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ بِهٖ خَيْرًا يُّفَقِّهْهُ فِى الدِّيْنِ" **या'नी** अल्लाह तआ़ला जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है, उस को **दीन की समझ** अ़त़ा फ़रमाता है।"

(صحيح البخاري، كتاب العلم باب من يرد الله به خيرا... إلخ، الحديث: ٧١، ج١، ص٤٣)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़िक़्ह** के शरई मा'ना येह हैं कि अह़कामे शरइय्या फ़रइय्या को उन के तफ़्सीली दलाइल से जानना। (इस ह़दीस के) मा'ना येह हुए कि **अल्लाह** जिसे तमाम दुन्या की भलाई अ़त़ा फ़रमाना चाहता है उसे फ़क़ीह बनाता है। (ماخوذ از نزهة القاری شرح صحيح البخاری، ج ١، ص ٤٢٤) या'नी उसे इ़ल्म, दीनी समझ और दानाई बख़्शता है। ख़याल रहे कि फ़िक़्हे ज़ाहिरी, शरीअ़त है और फ़िक़्हे बात़िनी, त़रीक़त और ह़क़ीक़त, येह ह़दीस दोनों को शामिल है। इस (ह़दीस) से दो मस्अले साबित हुए एक येह कि क़ुरआनो ह़दीस के तरजमे और अल्फ़ाज़ रट लेना इ़ल्मे दीन नहीं बल्कि इन का समझना **इ़ल्मे दीन** है। येही मुश्किल है। इसी के लिये फ़ुक़हा की तक़्लीद की जाती है। इसी वजह से तमाम **मुफ़स्सिरीन व मुह़द्दिसीन आइम्मए मुज्तहिदीन** के मुक़ल्लिद हुए अपनी ह़दीस दानी पर नाज़ां न हुए। दूसरे येह कि ह़दीस व क़ुरआन का इ़ल्म कमाल नहीं, बल्कि इन का समझना कमाल है। **आ़लिमे दीन** वोह है जिस की ज़बान पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान हो और दिल में इन का फ़ैज़ान।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 187)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इ़ल्मे दीन व उ़लमाए ह़क़्क़ा के फ़ज़ाइल बे शुमार हैं मगर अफ़्सोस कि आज कल इ़ल्मे दीन की त़रफ़

हमारा रुजह़ान न होने के बराबर है। अपने होन्हार बच्चों को दुन्यवी उ़लूम व फ़ुनून तो ख़ूब सिखाए जाते हैं मगर सुन्नतें सिखाने की त़रफ़ तवज्जोह नहीं की जाती। अगर बच्चा ज़रा ज़हीन हो तो उस के वालिदैन के दिल में उसे डॉक्टर, इन्जीनियर, प्रोफ़ेसर, कम्पयूटर प्रोग्रामर बनाने की ख़्वाहिश अंगड़ाइयां लेने लगती है और इस ख़्वाहिश की तक्मील के लिये उस की दीनी तरबिय्यत से मुंह मोड़ कर मग़रिबी तहज़ीब के नुमायन्दा इदारों के मख़्लूत़ माह़ोल में ता'लीम दिलवाने में कोई आ़र मह़सूस नहीं की जाती बल्कि उसे "आ'ला ता'लीम" की ख़ात़िर कुफ़्फ़ार के ह़वाले करने से भी दरेग़ नहीं किया जाता। और अगर बच्चा कुन्द ज़ेह्न है या शरारती है या मा'ज़ूर है तो जान छुड़ाने के लिये उसे किसी दारुल उ़लूम या जामिआ़ में दाख़िला दिला दिया जाता है। ब ज़ाहिर इस की वजह येही नज़र आती है कि वालिदैन की अक्सरिय्यत का **मत़्मह़े नज़र** मह़ज़ दुन्यवी माल व जाह होती है, उख़्रवी मरातिब का ह़ुसूल उन के पेशे नज़र नहीं होता। वालिदैन को चाहिये कि अपनी औलाद को आ़लिम बनाएं ताकि वोह आ़लिम बनने के बा'द मुआ़शरे में लाइक़े तक़्लीद किरदार का मालिक बने और दूसरों को इ़ल्मे दीन भी सिखाए।

**मदीना :** اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के ज़ेरे इन्तिज़ाम कसीर जामिआ़त बनाम "**जामिअ़तुल मदीना**" क़ाइम हैं। इन के ज़रीए़ ला ता'दाद इस्लामी भाइयों को (ह़स्बे ज़रूरत क़ियाम व त़आ़म की सहूलत के साथ) **दर्से निज़ामी** (या'नी आ़लिम कोर्स) और इस्लामी बहनों को "**आ़लिमा कोर्स**" की मुफ़्त ता'लीम दी जाती है। इस के साथ साथ **जामिआ़त** में ऐसा मदनी माहोल फ़राहम करने की कोशिश की जाती है कि यहां से पढ़ने वाले इ़ल्म व अ़मल का पैकर

बन कर निकलें। आप भी अपनी औलाद को इ़ल्म व अ़मल सिखाने के लिये **जामिअ़तुल मदीना** में पढ़ाइये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ह़दीस (13) नजात का ज़रीअ़ा

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "مَنْ صَمَتَ نَجَا **या'नी** जो ख़ामोश रहा नजात पा गया।"

(جامع الترمذي، ابواب صفة القيامة، الحديث ٢٥٠٩، ج٤، ص ٢٢٥)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस फ़रमान का एक मत़्लब येह भी हो सकता है कि जिस ने ख़ामोशी इख़्तियार की वोह दोनों जहां की बलाओं से मह़फ़ूज़ रहा। **हुज्जतुल इस्लाम** इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "कलाम चार क़िस्म के हैं, (एक) **ख़ालिस नुक़्सान देह,** (दूसरा) **ख़ालिस मुफ़ीद,** (तीसरा) **नुक़्सान देह भी और मुफ़ीद भी,** (चौथा) **न नुक़्सान देह और न मुफ़ीद। ख़ालिस नुक़्सान देह** से हमेशा परहेज़ ज़रूरी है। **ख़ालिस मुफ़ीद** कलाम ज़रूर करे। जो **कलाम** नुक़्सान देह भी हो और मुफ़ीद भी उस के बोलने में एह़तियात़ करे, बेहतर है कि न बोले और **चौथी क़िस्म** के कलाम में वक़्त ज़ाएअ़ करना है। इन कलामों में इम्तियाज़ करना मुश्किल है **लिहाज़ा ख़ामोशी बेहतर है।"** (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 464)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## बोलने का नुक़्सान

**एक** मर्तबा बादशाह बहराम किसी दरख़्त के नीचे बैठा हुवा था कि उसे किसी परिन्दे के बोलने की आवाज़ सुनाई दी। उस ने परिन्दे की त़रफ़ तीर फेंका जो उसे जा लगा (और वोह हलाक हो गया)। बहराम ने कहा : "ज़बान की **ह़िफ़ाज़त** इन्सान और परिन्दे दोनों के लिये मुफ़ीद है कि अगर येह न बोलता तो इस की जान बच जाती।"

(المستطرف فی کل فن مستظرف ،الباب الثالث عشر ،ج ۱، ص ۱٤۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

## ह़दीस (14) रहनुमाई की फ़ज़ीलत

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू मस्ऊ़द अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूल अकरम शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "مَنْ دَلَّ عَلٰی خَیْرٍ فَلَهٗ مِثْلُ اَجْرِ فَاعِلِهٖ **या'नी** जो शख़्स किसी को नेकी का रास्ता बताएगा, तो उसे भी उतना ही **सवाब** मिलेगा, जितना कि उस नेकी पर अ़मल करने वाले को।"

(صحیح مسلم، کتاب الإمارة، باب فضل اعانة الغازي... الخ، الحدیث ۱۸۹۳، ص ۱۰۵۰)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** नेकी करने वाला, कराने वाला, बताने वाला, मश्वरा देने वाला सब सवाब के **मुस्तह़िक़** हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 194) सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हारे ज़रीए़ किसी एक को भी हिदायत दे दे तो येह तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊंटों से **बेहतर** है।" (سنن ابو داؤد، الحدیث ۳٦٦۱، ج۳، ص ۳۵۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

## ह़दीस (15) नेकी की दा'वत

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त़्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "بَلِّغُوْا عَنِّیْ وَلَوْ آیَۃً **या'नी** मेरी त़रफ़ से पहुंचा दो, अगर्चे एक ही आयत हो।" (صحیح البخاري، کتاب احادیث الانبیاء،باب ما ذکرعن بنی اسرائیل،الحدیث ٣٤٦١،ج٢،ص٤٦٢)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आयत** के मा'ना अ़लामत और निशानी के हैं। इस लिह़ाज़ से ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के **मो'जिज़ात**, अह़ादीस, अह़काम, क़ुरआनी आयात सब आयतें हैं। इस्त़िलाह़ में क़ुरआन के उस जुम्ले को आयत कहा जाता है जिस का मुस्तक़िल नाम न हो। नाम वाले मज़्मून को सूरत कहते हैं। यहां आयत से लुग़वी मा'ना मुराद हैं या'नी जिसे कोई मस्अला या ह़दीस या क़ुरआन शरीफ़ की आयत याद हो वोह दूसरे को पहुंचा दे। तब्लीग़ सिर्फ़ उ़लमा دَامَتْ فُیُوْضُہُم पर फ़र्ज़ नहीं, हर मुसल्मान ब क़दरे इ़ल्म **मुबल्लिग़** है और हो सकता है कि आयत के इस्त़िलाह़ी मा'ना मुराद हों और इस से आयत के अल्फ़ाज़ मा'ना मत़्लब मसाइल सब मुराद हों या'नी जिसे एक आयत ह़िफ़्ज़ हो उस के मुतअ़ल्लिक़ कुछ मसाइल मा'लूम हों लोगों तक पहुंचाए, तब्लीग़ भी बड़ी अहम इ़बादत है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 185)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा कि हम जो कुछ भी सुन्नतें वग़ैरा जानते हैं उसे अह़सन त़रीक़े से दूसरे इस्लामी भाइयों तक पहुंचाना चाहिये। हां आयाते मुक़द्दसा की तफ़्सीर और अह़ादीसे मुबारका

की शर्ह़, आ़म इस्लामी भाई अपनी त़रफ़ से नहीं कर सकता, येह मुफ़स्सिरीन व मुह़द्दिसीने किराम का काम है। ताहम नेकी की दा'वत देने वाले मुबल्लिग़ के लिये येह बात निहायत ही ज़रूरी है कि वोह इ़ल्म ह़ासिल करता रहे और इस मस्रूफ़िय्यत के दौर में ह़ुसूले इ़ल्म के आसान ज़राएअ़ में से एक ज़रीआ़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त** में शिर्कत भी है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (16) दुआ़ की अहम्मिय्यत

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ** या'नी दुआ़ इ़बादत का **मग़ज़** है।"

(جامع الترمذي، كتاب الدعوات، الحديث: ٣٣٨٢، ج٥،ص ٢٤٣)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** दुआ़ इ़बादत का रुक्ने आ'ला है। दुआ़ इ़बादत का मग़्ज़ इस ए'तिबार से है कि दुआ़ मांगने वाला हर एक से कनारा कर के अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मुनाजात करता है। (فیض القدیر، ج۳، ص۷۲۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (17) दुआ़ बला को टाल देती है

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "**اَلدُّعَاءُ یَرُدُّ الْبَلَاءَ** या'नी दुआ बला को टाल देती है।"

(الجامع الصغیر، للسیوطي، الحدیث: ٤٢٦٥، ص٢٥٩)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** दुआ के दो फ़ाएदे हैं एक येह कि इस की बरकत से आई बला टल जाती है दूसरे येह कि आने वाली बला रुक जाती है। लिहाज़ा फ़क़त बला आने पर ही दुआ न की जाए बल्कि हर वक़्त दुआ मांगनी चाहिये, शायद कोई बला आने वाली हो जो इस दुआ से रुक जाए। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 3, स. 295)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ग़ैबी मदद

**दौरे नबवी** में एक ताजिर मदीनए पाक से शाम और शाम से मदीनतुल मुनव्वरह माल लाता और ले जाता था। एक बार अचानक एक डाकू घोड़े पर सुवार उस की राह में हाइल हुवा और ललकार कर ताजिर पर झपटा। ताजिर ने कहा : "अगर तू माल के लिये ऐसा कर रहा है तो माल ले ले और मुझे छोड़ दे।" डाकू कहने लगा : "माल तो मैं लूंगा ही, इस के साथ साथ तेरी जान भी लूंगा।" ताजिर ने उसे बहुत समझाया मगर वोह न माना। बिल आख़िर ताजिर ने उस से इतनी मोहलत मांगी कि वुज़ू कर के नमाज़ पढ़े और कुछ दुआ करे। डाकू इस पर राज़ी हो गया। ताजिर ने वुज़ू कर के चार रक्अत नमाज़ पढ़ी और हाथ उठा कर तीन बर येह दुआ की :

يَـــا وَدُوْدُ يَـــا وَدُوْدُ يَـــا وَدُوْدُ، يَـاذَاالْـعَـرْشِ الْـمَـجِيْدِ،يَامُبْدِئُ يَـامُعِيْدُ يَـا فَعَّـالٌ لِّمَا يُـرِيْدُ اَسْئَلُكَ بِنُوْرِوَجْهِكَ الَّذِىْ مَلَاءَ اَرْكَـــانَ عَــــرْشِكَ وَاَسْـئَلُكَ بِقُدْرَتِكَ الَّتِىْ قَـدَرْتَ بِهَا عَلٰى جَمِيْعِ خَلْقِكَ وَبِـرَحْـمَتِكَ الَّتِىْ وَسِعَتْ كُلَّ شَىْءٍ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ يَا مُغِيْثُ اَغِثْنِىْ

तरजमा : ऐ महब्बत फ़रमाने वाले, ऐ महब्बत फ़रमाने वाले, ऐ महब्बत फ़रमाने वाले, ऐ बुज़ुर्ग अ़र्श वाले, ऐ पैदा करने वाले, ऐ लौटाने वाले, ऐ अपने इरादे को पूरा करने वाले, मैं तुझ से सुवाल करता हूं तेरे उस नूर के तुफ़ैल जिस ने तेरे अ़र्श को भर दिया, मैं तुझ से सुवाल करता हूं तेरी उस कुदरत के तुफ़ैल जिस के साथ तू अपनी तमाम मख़्लूक़ पर क़ादिर है और तेरी उस रह़मत के तुफ़ैल जो हर शै को घेरे हुए है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं है ऐ मदद फ़रमाने वाले मेरी मदद फ़रमा।

**जब** वोह ताजिर दुआ़ से फ़ारिग़ हुवा तो देखा कि एक शख़्स सफ़ेद घोड़े पर सुवार, सब्ज़ कपड़ों में मल्बूस हाथ में नूरानी तलवार लिये हुए मौजूद है। वोह डाकू उस सुवार की त़रफ़ बढ़ा। मगर क़रीब पहुंचते ही उस का एक नेज़ा खा कर ज़मीन पर आ रहा। वोह सुवार ताजिर के पास आया और कहा : "तुम इसे क़त्ल करो।" ताजिर ने पूछा : "आप कौन हैं ?" मैं ने अब तक किसी को क़त्ल नहीं किया और न इसे क़त्ल करना मेरे दिल को गवारा होगा।" उस सुवार ने पलट कर डाकू को मार डाला और ताजिर को बताया कि मैं ने तीसरे आस्मान के

दरवाज़ों की खटपट सुनी जिस से जान लिया कि कोई वाक़िआ़ हुवा है, और जब तुम ने दोबारा दुआ़ की आस्मान के दरवाज़े इस ज़ोर से खुले कि उन से चिंगारियां निकलने लगीं । तुम्हारी सहबारा दुआ़ सुन कर ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام तशरीफ़ लाए और उन्हों ने आवाज़ दी : "कौन है जो इस सितम रसीदा की मदद को जाए ?" तो मैं ने अपने रब से दुआ़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस के क़त्ल का काम मेरे ज़िम्मे फ़रमा ।" येह बात याद रखो जो मुसीबत के वक़्त तुम्हारी येह दुआ़ पढ़ेगा चाहे कैसा ही ह़ादिसा हो अल्लाह तआ़ला उसे उस मुसीबत से मह़फ़ूज़ रखेगा और उस की दाद रसी फ़रमाएगा ।

(روض الرياحين ،الحكاية الثامنة والتسعون بعد مئتين ،ص ٢٥٦ و الاصابة فى تمييز الصحابة، ج٧،ص ٣١٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ह़दीस (18) धोका देने का नुक़्सान

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "**مَنْ غَشَّ فَلَيْسَ مِنَّا**" **या'नी** जो धोका देही करे वोह हम में से नहीं है।"

(جامع الترمذي،ابواب البيوع،باب ماجاء في كراهية الغش ،الحديث١٣١٩، ج٣،ص٥٧)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस (ह़दीस) से मा'लूम हुवा कि तिजारती चीज़ में ऐ़ब पैदा करना भी जुर्म है, और क़ुदरती पैदा शुदा ऐ़ब को छुपाना भी जुर्म । देखो (नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने) बारिश से भीगे ग़ल्ले को छुपाना मिलावट ही में दाख़िल फ़रमाया । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 273) **चुनान्चे** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ल्ले के एक ढेर पर गुज़रे तो अपना हाथ शरीफ़ उस में डाल दिया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उंग्लियों ने उस में तरी पाई तो फ़रमाया : "ऐ ग़ल्ले वाले येह क्या ?" अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस पर बारिश पड़ गई।" फ़रमाया : "तो गीले ग़ल्ले को तूने ढेर के ऊपर क्यूं न डाला ताकि इसे लोग देख लेते, जो धोका दे वोह हम में से नहीं। (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب قول النبی ﷺ من غش فلیس منا، الحدیث ۱۰۲، ص ٦٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (19) तौबा की बुन्याद

**ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हु़ज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "**اَلنَّدَمُ تَوْبَةٌ या'नी** शरमिन्दगी **तौबा** है।"

(سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب ذکر التوبة، الحدیث: ٤٢٥٢، ج ٤، ص ٤٩٢)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** चूंकि गुज़श्ता गुनाहों पर नदामत (या'नी शरमिन्दगी) तौबा का रुक्ने आ'ला है कि इस पर बाक़ी सारे अरकान मब्नी हैं, इस लिये सिर्फ़ नदामत का ज़िक्र फ़रमाया। जो किसी का ह़क़ मारने पर नादिम होगा तो ह़क़ अदा भी कर देगा, जो बे नमाज़ी होने पर शरमिन्दा होगा वोह गुज़श्ता छूटी नमाज़ें क़ज़ा भी कर लेगा। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 379)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि नदामते क़ल्बी को पाने के लिये इन मदनी फूलों पर अ़मल करें :**

**(1) अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों पर इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करें कि "उस ने मुझे करोड़हा ने'मतों से नवाज़ा मसलन मुझे पैदा किया.... मुझे ज़िन्दगी बाक़ी रखने के लिये सांसें अ़त़ा फ़रमाईं.... चलने के लिये पाउं दिये.... छूने के लिये हाथ दिये.... देखने के लिये आंखें अ़त़ा फ़रमाईं.... सुनने के लिये कान दिये.... सूंघने के लिये नाक दी.... बोलने के लिये ज़बान अ़त़ा की और करोड़हा ऐसी ने'मतें अ़त़ा फ़रमाईं जिन पर आज तक मैं ने कभी ग़ौर नहीं किया।" फिर अपने आप से यूं सुवाल करे : "क्या इतने एह़सानात करने वाले रब तआ़ला की ना फ़रमानी करना मुझे ज़ैब देता है ?"

**(2)** गुनाहों के अन्जाम के त़ौर पर जहन्नम में दिये जाने वाले अ़ज़ाबे इलाही की शिद्दत को पेशे नज़र रखें मसलन सरवरे दो आ़लम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

**﴾1﴿** "दोज़ख़ियों में सब से हलका अ़ज़ाब जिस को होगा उसे आग के जूते पहनाए जाएंगे जिन से उस का दिमाग़ खौलने लगेगा।"

(صحیح مسلم ، کتاب الایمان ، باب اھون اھل النار عذابا ،رقم ٣٦١ ، ص ١٣٤)

**﴾2﴿** "अगर उस ज़र्द पानी का एक डोल जो दोज़ख़ियों के ज़ख़्मों से जारी होगा दुन्या में डाल दिया जाए तो दुन्या वाले बदबूदार हो जाएं।"

(جامع الترمذی ، کتاب صفة جھنم ،باب ماجاء فی صفة شراب اھل النار ،الحدیث٢٥٩٣ ، ج ٤،ص ٢٦٣)

**﴾3﴿** "दोज़ख़ में **बुख़्ती** (या'नी बड़े) ऊंट के बराबर सांप हैं, येह सांप एक मर्तबा किसी को काटे तो उस का दर्द और ज़ह्र चालीस बरस तक

रहेगा। और दोज़ख़ में पालान बंधे हुए ख़च्चरों के मिस्ल बिच्छू हैं जिन के एक मर्तबा काटने का दर्द चालीस साल तक रहेगा।''

(المسند للامام احمد بن حنبل ، حديث عبدالله بن الحارث ، رقم ١٧٧٢٩ ،ج٦ ،ص ٢١٧)

﴾4﴿ ''तुम्हारी येह आग जिसे इब्ने आदम रोशन करता है, जहन्नम की आग से सत्तर70 दरजे कम है।'' येह सुन कर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जलाने के लिये तो येही काफ़ी है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''वोह इस से उन्हत्तर(69) दरजे ज़ियादा है, हर दरजे में यहां की आग के बराबर गरमी है।''

(صحيح مسلم، كتاب الجنة،باب فى شدة حرنار جهنم ،رقم ٢٨٤٣ ، ص ١٥٢٣)

फिर अपने आप से यूं मुख़ातिब हों। ''अगर मुझे जहन्नम में डाल दिया गया तो मेरा येह नर्म व नाज़ुक बदन उस के होलनाक अ़ज़ाबात को किस त़रह़ बरदाश्त कर पाएगा ? जब कि जहन्नम में पहुंचने वाली तकालीफ़ की शिद्दत के सबब इन्सान पर न तो बेहोशी त़ारी होगी और न ही उसे मौत आएगी। आह ! वोह वक़्त कितनी बे बसी का होगा जिस के तसव्वुर से ही दिल कांप उठता है। क्या येह रोने का मक़ाम नहीं ? क्या अब भी गुनाहों से वह़शत मह़सूस नहीं होगी और दिल में नेकियों की मह़ब्बत नहीं बढ़ेगी ? क्या अब भी बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में सच्ची तौबा पर दिल माइल नहीं होगा ?''

उम्मीद है कि बार बार इस अन्दाज़ से फ़िक्रे मदीना करने की बरकत से दिल में नदामत पैदा हो जाएगी और **सच्ची तौबा** की तौफ़ीक़ मिल जाएगी। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ह़दीस (20) ताइब की फ़ज़ीलत

**ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ रिवायत करते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنۡبِ کَمَنۡ لَّا ذَنۡبَ لَہٗ **या'नी** गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसा कि उस ने गुनाह किया ही नहीं।"

(سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب ذكر التوبة، الحديث ٤٢٥٠، ج٤، ص ٤٩١)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** तौबा से मुराद सच्ची और मक़्बूल तौबा है जिस में तमाम शराइत़े जवाज़ व शराइत़े क़बूल जम्अ़ हों कि हुक़ूकुल इबाद और हुक़ूके शरीअ़त अदा कर दिये जाएं, फिर गुज़श्ता कोताही पर नदामत हो और आयिन्दा न करने का अ़ह्द, इस तौबा से गुनाह पर मुत़्लक़न पकड़ न होगी बल्कि बा'ज़ सूरतों में तो गुनाह नेकियों से बदल जाएंगे। ह़ज़रते राबिआ़ बसरिया رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہَا ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी और ह़ज़रते फुज़ैल बिन इयाज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمَا से फ़रमाया करती थीं : "मेरे गुनाह तुम्हारी नेकियों से कहीं ज़ियादा हैं, अगर मेरी तौबा से येह गुनाह नेकियां बन गए तो फिर मेरी नेकियां तुम्हारी नेकियों से बहुत बढ़ जाएंगी।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 379)

## सच्ची तौबा किसे कहते हैं ?

**आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, **शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن फ़रमाते हैं : **सच्ची तौबा** के येह मा'ना हैं कि गुनाह पर इस लिये कि वोह उस के रब عَزَّوَجَلَّ की **ना फ़रमानी** थी **नादिम व परेशान** हो कर फ़ौरन **छोड़** दे और

आयिन्दा कभी उस गुनाह के पास न जाने का सच्चे दिल से पूरा **अ़ज़्म** (या'नी इरादा) करे जो चारए कार इस की तलाफ़ी का अपने हाथ में हो बजा लाए । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 121)

**मदीना :** तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मकतबतुल मदीना की शाएअ़ कर्दा किताब "तौबा की रिवायात व ह़िकायात" का मुत़ालआ़ कीजिये ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## सूदख़ोर की तौबा

**इब्तिदाई दौर** में ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब **अ़जमी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बहुत अमीर थे और अहले बसरा को सूद पर क़र्ज़ा दिया करते थे । जब मक़्रूज़ से **क़र्ज़** का तक़ाज़ा करने जाते तो उस वक़्त तक न टलते जब तक कि **क़र्ज़** वुसूल न हो जाता । और अगर किसी मजबूरी की वजह से क़र्ज़ वुसूल न होता तो मक़्रूज़ से अपना वक़्त ज़ाएअ़ होने का **हर्जाना** वुसूल करते, और उस रक़म से ज़िन्दगी बसर करते । एक दिन किसी के यहां वुसूलयाबी के लिये पहुंचे तो वोह घर पर मौजूद न था । उस की बीवी ने कहा कि "न तो शोहर घर पर मौजूद है और न मेरे पास तुम्हारे देने के लिये कोई चीज़ है, अलबत्ता मैं ने आज एक भेड़ ज़ब्ह़ की है जिस का तमाम गोश्त तो ख़त्म हो चुका है अलबत्ता सर बाक़ी रह गया है, अगर तुम चाहो तो वोह मैं तुम को दे सकती हूं ।"

चुनान्चे आप उस से सर ले कर घर पहुंचे और बीवी से कहा कि येह सर सूद में मिला है इसे पका डालो । बीवी ने कहा : "घर में न लकड़ी है और न आटा, भला मैं खाना किस त़रह़ तय्यार करूं ?" आप ने कहा कि "इन दोनों चीज़ों का भी इन्तिज़ाम मक़्रूज़ लोगों से सूद ले

कर करता हूं।" और सूद ही से येह दोनों चीज़ें ख़रीद कर लाए। जब खाना तय्यार हो चुका तो एक साइल ने आ कर सुवाल किया। आप ने कहा कि "तेरे देने के लिये हमारे पास कुछ नहीं है और तुझे कुछ दे भी दें तो इस से तू दौलत मन्द न हो जाएगा लेकिन हम मुफ़्लिस हो जाएंगे।" चुनान्चे साइल मायूस हो कर वापस चला गया।

जब बीवी ने सालन निकालना चाहा तो वोह हंडिया सालन की बजाए **ख़ून** से लबरेज़ थी। उस ने शोहर को आवाज़ दे कर कहा : "देखो तुम्हारी कन्जूसी और बद बख़्ती से येह क्या हो गया है ?" आप को येह देख कर इ़ब्रत ह़ासिल हुई और बीवी को गवाह बना कर कहा कि आज मैं हर बुरे काम से **तौबा** करता हूं। येह कह कर मक़रूज़ लोगों से अस्ल रक़म लेने और सूद ख़त्म करने के लिये निकले। रास्ते में कुछ लड़के खेल रहे थे आप को देख कर कुछ लड़कों ने आवाज़े कसना शुरूअ़ किये कि "दूर हट जाओ ह़बीब सूदख़ोर आ रहा है, कहीं उस के क़दमों की ख़ाक हम पर न पड़ जाए और हम उस जैसे बद बख़्त न बन जाएं।" येह सुन कर आप बहुत रन्जीदा हुए और ह़ज़रते ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गए उन्हों ने आप को ऐसी नसीह़त फ़रमाई कि बेचैन हो कर दोबारा **तौबा** की। वापसी में जब एक मक़रूज़ शख़्स आप को देख कर भागने लगा तो फ़रमाया "तुम मुझ से मत भागो, अब तो मुझ को तुम से भागना चाहिये ताकि एक गुनहगार का **साया** तुम पर न पड़ जाए।" जब आप आगे बढ़े तो उन्ही लड़कों ने कहना शुरूअ़ किया कि "रास्ता दे दो अब ह़बीब **ताइब** हो कर आ रहा है कहीं ऐसा न हो कि हमारे पैरों की गर्द इस पर पड़ जाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारा नाम गुनाहगारों में दर्ज कर ले।" आप ने बच्चों की येह बात सुन कर

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ की : ''तेरी कुदरत भी अ़जीब है कि आज ही मैं ने तौबा की और आज ही तूने लोगों की ज़बान से मेरी नेक नामी का ए'लान करा दिया।''

**इस** के बा'द आप ने ए'लान करा दिया कि जो शख़्स मेरा मक़्रूज़ हो वोह अपनी तह़रीर और माल वापस ले जाए। इस के इ़लावा आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी तमाम दौलत राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में **ख़र्च** कर दी। फिर साह़िले फ़ुरात पर एक इ़बादत ख़ाना ता'मीर कर के इ़बादत में मश्ग़ूल रहे और येह मा'मूल बना लिया कि दिन को इ़ल्मे दीन की तह़सील के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की ख़िदमत में पहुंच जाते और रात भर मश्ग़ूले इ़बादत रहते। चूंकि (मुकम्मल कोशिश के बा वुजूद) क़ुरआने मजीद का तलफ़्फ़ुज़ सह़ीह़ मख़्रज से अदा नहीं कर सकते थे इस लिये आप को **अ़जमी** का ख़िताब दे दिया गया।

(تذکرة الاولیاء، باب ،ذکر حبیب عجمی ،ج١، ص ٥٦-٥٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (21) नमाज़ की अहम्मिय्यत

**अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''**اَلصَّلَاةُ عِمَادُ الدِّيْنِ** **या'नी** नमाज़ दीन का **सुतून** है।''

(شعب الإيمان، باب فى الصلوات، الحديث ٢٨٠٧، ج٣، ص٣٩)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** नमाज़ दीन की अस्ल और बुन्याद है, इसे उम्मुल इ़बादात, मे'राजुल मुअमिनीन भी कहा जाता है।

(فيض القدير،تحت الحديث ٥١٨٧، ج ٤ ،ص ٣٢٧)

## मछली अपनी जगह पर थी

शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह जिला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की वालिदए माजिदा ने एक रोज़ अपने शोहर से मछली लाने की फ़रमाइश की। शैख़ के वालिद बाज़ार गए और अपने फ़रज़न्द (अबू अ़ब्दुल्लाह जिला) को भी हमराह ले गए। बाज़ार से मछली ख़रीदी, और एक मज़दूर तलाश करने लगे ताकि वोह मछली घर तक पहुंचा दे। एक लड़का मिला और उस ने मछली सर पर उठा ली और साथ चला, रास्ते में मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनाई दी। उस मज़दूर लड़के ने कहा : "नमाज़ के लिये मुझे त़हारत की ह़ाजत है और अज़ान हो रही है, अगर आप राज़ी हों तो मेरा इन्तिज़ार कर लें, वरना अपनी मछली ले कर जाएं।" इतना कह कर उस ने मछली वहीं छोड़ी और मस्जिद चला गया। शैख़ के वालिद ने कहा : "इस लड़के का **अल्लाह** तआ़ला पर तवक्कुल है, हमें ब दरजए औला तवक्कुल करना चाहिये।" चुनान्चे मछली वहीं छोड़ कर हम लोग नमाज़ पढ़ने चले गए। हम लोग नमाज़ पढ़ कर निकले तो मछली अपनी जगह थी, लड़के ने उठा ली और हम लोग घर पहुंचे।

(روض الریاحین الحکایۃ التاسعۃ والعشرون بعد المئتین،ص ۲۱۵،ملخّصا)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (22) रौज़ए अक़्दस की ह़ाज़िरी

**ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "**مَنْ زَارَ قَبْرِیْ وَجَبَتْ لَہٗ شَفَاعَتِیْ**" **या'नी जिस** ने मेरी

क़ब्र की ज़ियारत की, उस के लिये मेरी **शफ़ाअ़त** लाज़िम हो गई।"

(شعب الإيمان،باب في المناسك،فضل الحج والعمرة، الحديث٤١٥٩، ج٣، ص ٤٩٠)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह** तआ़ला कुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ○

(پ ٥،النسآ ٦٤)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर अल्लाह से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं।

**सदरुल अफ़ाज़िल** ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى (अल मुतवफ़्फ़ा 1367 हि.) इस आयत के तह़्त तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में लिखते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि बारगाहे इलाही में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वसीला और आप की शफ़ाअ़त कार बरआरी (या'नी काम बन जाने) का ज़रीआ़ है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात शरीफ़ के बा'द एक आ'राबी (या'नी देहाती शख़्स) रौज़ए अक्दस पर ह़ाज़िर हुवा और रौज़ए शरीफ़ा की ख़ाके पाक अपने सर पर डाली और अ़र्ज़ करने लगा : "या रसूलल्लाह जो आप ने फ़रमाया हम ने सुना और जो आप पर नाज़िल हुवा उस में येह आयत भी है وَلَوْاَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْا , मैं ने बेशक अपनी जान पर ज़ुल्म किया और मैं आप के हुज़ूर में अल्लाह से अपने **गुनाह की**

**बख़्शिश** चाहने ह़ाज़िर हुवा तो मेरे रब से मेरे गुनाह की बख़्शिश कराइये।'' इस पर क़ब्र शरीफ़ से निदा आई कि तेरी **बख़्शिश** की गई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالیٰ علیٰ محمَّد

## ह़दीस (23) अ़ज़ाबे क़ब्र

**ह़ज़रते** सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''**عَذَابُ الْقَبْرِ حَقٌّ या'नी** क़ब्र का अ़ज़ाब ह़क़ है।''

(صحیح البخاري، کتاب الجنائز، باب ماجاء في عذاب القبر، الحدیث ١٣٧٢، ج ١، ص ٤٦٣)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अ़ज़ाबे क़ब्र के मुतअ़ल्लिक़ चन्द मसाइल याद रखने चाहिएं (1) यहां क़ब्र से मुराद आ़लमे बरज़ख़ है। जिस की इब्तिदा हर शख़्स की मौत से है इन्तिहा क़ियामत पर, उ़र्फ़ी क़ब्र मुराद नहीं लिहाज़ा जो मुर्दा दफ़्न न हुवा बल्कि जला दिया गया या डुबो दिया गया या उसे शेर खा गया उसे भी क़ब्र का हि़साब व अ़ज़ाब है। (2) हि़साबे क़ब्र और है अ़ज़ाबे क़ब्र कुछ और बा'ज़ लोग हि़साबे क़ब्र में काम्याब होंगे मगर बा'ज़ गुनाहों की वजह से अ़ज़ाब में मुब्तला जैसे चुग़ुल ख़ोर और गन्दा (या'नी पेशाब के छींटों से न बचने वाला) (3) काफ़िर को अ़ज़ाबे क़ब्र दाइमी होगा गुनहगार मोमिन को आ़रिज़ी (4) अ़ज़ाबे क़ब्र रूह़ को है जिस्म इस के ताबेअ़ मगर ह़श्र के बा'द वाला अ़ज़ाब व सवाब रूह़ व जिस्म दोनों को होगा।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 125, माख़ूज़न)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالیٰ علیٰ محمَّد

# क़ब्र में आग भड़क उठी ?

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़म्र बिन शुरह़बील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक ऐसा शख़्स इन्तिक़ाल कर गया जिस को लोग **मुत्तक़ी** समझते थे। जब उसे दफ़्न कर दिया गया तो उस की **क़ब्र** में अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आ पहुंचे और कहने लगे, हम तुझ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **अ़ज़ाब के सो कोड़े** मारेंगे। उस ने ख़ौफ़ज़दा हो कर कहा कि मुझे क्यूं मारोगे ? मैं तो परहेज़ गार आदमी था। तो उन्हों ने कहा, अच्छा चलो पचास ही मारते हैं मगर वोह बराबर बह़स करता रहा ह़त्ता कि फ़िरिश्ते एक पर आ गए और उन्हों ने एक कोड़ा मार ही दिया। जिस से तमाम **क़ब्र में आग भड़क उठी** और वोह शख़्स जल कर ख़ाकिस्तर (या'नी राख) हो गया। फिर उस को ज़िन्दा किया गया तो उस ने दर्द से तिलमिलाते और रोते हुए फ़रियाद की, आख़िर मुझे येह कोड़ा क्यूं मारा गया ? तो उन्हों ने जवाब दिया, **एक रोज़ तूने बे वुज़ू नमाज़ पढ़ ली थी। और एक रोज़ एक मज़्लूम तेरे पास फ़रियाद ले कर आया मगर तूने फ़रियाद रसी न की।** (شَرحُ الصُّدور ص ١٦٥)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हुवा तो उस ने नेक और परहेज़ गार शख़्स की भी गिरिफ़्त फ़रमाई और वोह अ़ज़ाबे **क़ब्र** में घिर गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे ह़ाले ज़ार पर रह़्म फ़रमाए। और हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, (तख़्रीज शुदा), बाब : फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 61)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

## ह़दीस (24) क़ैदख़ाना

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''اَلدُّنْیَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّۃُ الْکَافِرِ'' **या'नी** दुन्या मोमिन के लिये **क़ैदख़ाना** है और काफ़िर के लिये **जन्नत**।''

(صحیح مسلم،کتاب الزھد و الرقائق،باب الدنیا سجن المؤمن،الحدیث۲۹۵۶،ص۱۵۸۲)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** या'नी मोमिन दुन्या में कितना ही आराम में हो, मगर उस के लिये आख़िरत की ने'मतों के मुक़ाबले में दुन्या जेलख़ाना है, जिस में वोह दिल नहीं लगाता। जेल अगर्चे A क्लास हो, फिर भी जेल है, और काफ़िर ख़्वाह कितनी ही तक्लीफ़ में हो, मगर आख़िरत के अ़ज़ाब के मुक़ाबिल उस के लिये दुन्या बाग़ और जन्नत है। वोह यहां दिल लगा कर रहता है। लिहाज़ा ह़दीस शरीफ़ पर येह ए'तिराज़ नहीं कि बा'ज़ मोमिन दुन्या में आराम से रहते हैं, और बा'ज़ काफ़िर तक्लीफ़ में। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 4)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## दुन्या क़ैदख़ाना है

**क़ाज़ी** सहल मुह़द्दिस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक दिन बड़े तुज़्को एह़तिशाम के साथ घोड़े पर सुवार कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे। अचानक एक ह़म्माम सुलगाने वाला, धूएं और ग़ुबार की कसाफ़त से मैला कुचैला **यहूदी** ह़ज़रते सहल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सामने आ कर खड़ा हो गया और कहने लगा कि क़ाज़ी साह़िब ! मुझे अपने नबी (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के इस फ़रमान का मत़्लब समझा दीजिये कि ''दुन्या मोमिन के लिये

**क़ैदख़ाना** है और काफ़िर के लिये **जन्नत** है।" क्यूं कि आप **मोमिन** हो कर इस ऐशो आराम और कर्रो फ़र के साथ रहते हैं और मैं काफ़िर हो कर इतना ख़स्ता ह़ाल और आलाम व मसाइब में गिरिफ़्तार हूं। क़ाज़ी सहल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बरजस्ता जवाब दिया : "आराम व आसाइश के बा वुजूद येह दुन्या मेरे लिये जन्नत की अ़ज़ीम ने'मतों के मुक़ाबले में **क़ैदख़ाना** है, जब कि तमाम तर तकालीफ़ के बा वुजूद येह दुन्या तुम्हारे लिये दोज़ख़ के होलनाक अ़ज़ाब के मुक़ाबले में **जन्नत** है।"

(تفسیرروح البیان،سورۃ الانعام ،تحت الآیۃ۳۲،ج۳،ص۲۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (25) मिस्कीन का ह़ज

**ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "**اَلْجُمُعَةُ حَجُّ الْمَسَاكِيْن** या'नी जुमुआ़ की नमाज़ मसाकीन का **ह़ज** है।"

(الفردوس بمأثور الخطاب، الحدیث ۲٤۳٦، ج۱، ص۳۳۳)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मसाकीन मिस्कीन की जम्अ़ है। जो शख़्स ह़ज के लिये जाने से आ़जिज़ हो उस का जुमुआ़ के दिन मस्जिद की त़रफ़ जाना उस के लिये ह़ज की मानिन्द है।

(فیض القدیر،تحت الحدیث ۳٦۳٦،ج۳،ص٤۷٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़ज की क़ुरबानी

**ह़ज़रते** सय्यिदुना रबीअ़ बिन सलमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان अपना

एक ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़ बयान फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा कुछ लोगों के साथ ह़ज पर जा रहा था। मेरा भाई भी मेरे साथ था। जब हम कूफ़ा पहुंचे तो मैं ज़रूरिय्याते सफ़र ख़रीदने के लिये बाज़ार की त़रफ़ चला गया। वहां मैं ने एक वीरान सी जगह में देखा कि एक ख़च्चर मरा पड़ा है और बहुत पुराने और बोसीदा कपड़े पहने हुए एक औ़रत चाक़ू से उस का गोश्त काट काट कर थैले में रख रही है। मैं ने सोचा कि हो सकता है कि येह औ़रत कोई भटियारन हो और येही मुर्दार का गोश्त पका कर लोगों को खिला दे, चुनान्चे मुझे इस की तह़क़ीक़ ज़रूर करनी चाहिये, पस मैं चुपके चुपके उस के पीछे हो लिया। चलते चलते वोह एक मकान के दरवाज़े पर पहुंची, उस ने दरवाज़ा बजाया तो अन्दर से पूछा गया : "कौन ?" तो जवाब दिया : "खोलो ! मैं ही बदह़ाल हूं।" दरवाज़ा खुला तो मैं ने देखा कि चार बच्चियां हैं जिन के चेहरों से बदह़ाली और मुसीबत टपक रही है। वोह औ़रत अन्दर दाख़िल हो गई और दरवाज़ा बन्द हो गया। मैं जल्दी से दरवाज़े के क़रीब गया और उस के सूराख़ों से अन्दर झांकने लगा। मैं ने देखा कि अन्दर से वोह घर बिल्कुल ख़ाली और बरबाद है। उस औ़रत ने वोह थैला उन लड़कियों के सामने रख दिया और रोते हुए कहने लगी : "लो ! इस को पका लो और **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा करो।"

**वोह** लड़कियां उस गोश्त को काट काट कर लकड़ियों पर भूनने लगीं। मेरे दिल को इस से बहुत ठेस पहुंची और मैं ने बाहर से आवाज़ दी कि, "ऐ अल्लाह की बन्दी ! ख़ुदा तआ़ला के वासित़े इस को न खा।" वोह पूछने लगी : "तुम कौन हो ?" मैं ने जवाब दिया : "मैं

परदेसी हूं ।'' उस ने कहा : ''हम तो ख़ुद मुक़द्दर के क़ैदी हैं, तीन साल से हमारा कोई मुईन व मददगार नहीं, तुम हम से क्या चाहते हो ?'' मैं ने कहा कि ''मजूसियों के एक फ़िर्क़े के सिवा किसी मज़्हब में मुर्दार खाना जाइज़ नहीं ।'' कहने लगी कि ''हम ख़ानदाने नुबुव्वत से हैं, इन का बाप इन्तिक़ाल कर चुका है, जो तर्का उस ने छोड़ा था वोह ख़त्म हो गया । हमें मा'लूम है कि मुर्दार खाना जाइज़ नहीं लेकिन हमारा चार दिन का **फ़ाक़ा** है और ऐसी ह़ालत में मुर्दार जाइज़ हो जाता है ।''

**उन** के ह़ालात सुन कर मुझे रोना आ गया, मैं उन्हें इन्तिज़ार करने का कह कर वापस हुवा और अपने भाई से कहने लगा कि, ''मेरा इरादा ह़ज का नहीं रहा ।'' भाई ने मुझे बहुत समझाया, फ़ज़ाइल वग़ैरा बताए । मैं ने कहा कि, ''बस लम्बी चौड़ी बात न करो ।'' फिर मैं ने अपना एह़राम और सारा सामान लिया और नक़्द छ6 सो दिरहम में से सो दिरहम का कपड़ा ख़रीदा और सो दिरहम का आटा ख़रीदा और बक़िय्या पैसा उस आटे में छुपा कर उस औ़रत के घर ले जा कर तमाम चीज़ें उस को दे दीं । वोह **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा करने लगी और कहने लगी : ''ऐ इब्ने सलमान ! जा अल्लाह तआ़ला तेरे अगले पिछले सब गुनाह **मुआ़फ़** फ़रमाए और तुझे **ह़ज** का सवाब अ़ता करे और **जन्नत** में तुझे जगह अ़ता फ़रमाए और दुन्या ही में तुझे ऐसा बदल अ़ता फ़रमाए जो दुन्या में तुझ पर ज़ाहिर हो जाए ।''

**सब** से बड़ी लड़की ने कहा : ''**अल्लाह** तआ़ला आप को इस का दुगना **अज्र** अ़ता फ़रमाए और आप के गुनाह **बख़्श** दे ।'' दूसरी लड़की ने कहा कि ''आप को **अल्लाह** तआ़ला इस से **ज़ियादा** अ़ता

फ़रमाए जितना आप ने हमें दिया ।'' तीसरी ने कहा कि ''**अल्लाह** तआ़ला हमारे नानाजान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ आप का ह़श्र करे ।'' चौथी ने कहा कि, ''ऐ **अल्लाह** तआ़ला ! जिस ने हम पर एह़सान किया तू उस का **ने'मल बदल** जल्दी अ़ता कर और उस के अगले पिछले गुनाह **मुआ़फ़** कर दे ।'' फिर मैं वापस आ गया ।

**मैं** मजबूरन कूफ़ा ही में रुक गया और बाक़ी साथी ह़ज के लिये रवाना हो गए । जब ह़ाजी लौट कर आने लगे तो मैं ने सोचा कि ''उन का इस्तिक़्बाल करूं और अपने लिये दुआ़ करने का कहूं, शायद किसी की मक़्बूल दुआ़ मुझे भी लग जाए ।'' **जब मुझे ह़ाजियों का क़ाफ़िला नज़र आया तो अपनी ह़ज से मह़रूमी पर बे इख़्तियार रोना आ गया ।** मैं उन से मिला तो कहा **:** ''**अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे ह़ज को क़बूल फ़रमाए और तुम्हें अख़राजात का बदला अ़ता फ़रमाए ।'' उन में से एक ने पूछा कि ''येह दुआ़ कैसी ?'' मैं ने कहा **:** ''**येह उस शख़्स की दुआ़ है जो दरवाज़े तक की ह़ाज़िरी से मह़रूम हो ।**'' वोह कहने लगे, ''बड़े तअ़ज्जुब की बात है कि अब तू वहां जाने ही से इन्कार कर रहा है । क्या तू हमारे साथ अ़रफ़ात के मैदान में न था ?...... तूने हमारे साथ रम्ये जमरात न की ?...... और क्या तूने हमारे साथ त़वाफ़ न किये ?......'' आप फ़रमाते हैं कि मैं दिल ही दिल में तअ़ज्जुब करने लगा कि इतने में ख़ुद मेरे शह्र का क़ाफ़िला भी आ गया । मैं ने कहा कि ''**अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी कोशिशें क़बूल फ़रमाए ।'' तो वोह भी येही कहने लगे कि ''तू हमारे साथ अ़रफ़ात पर न था ? या रम्ये जमरात न की ? और अब इन्कार करता है ।''

**फिर** उन में से एक शख़्स आगे बढ़ा और कहने लगा कि "भाई ! अब क्यूं इन्कार करते हो ? क्या तुम हमारे साथ मक्के शरीफ़ और मदीनए मुनव्वरह में न थे ? और हम शफ़ीए आ'ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत कर के वापस आ रहे थे तो रश की वजह से तुम ने येह थैली मेरे पास अमानत रखवाई थी, जिस की मोहर पर लिखा हुवा है : "مَنْ عَامَلَنَا رَبِحَ या'नी जो हम से मुआ़मला करता है, नफ़्अ़ कमाता है," अब येह थैली वापस ले लो ।"

**ह़ज़रते** सय्यिदुना रबीअ़ बिन सलमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि "मैं ने उस थैली को पहले कभी न देखा था, मैं उस को ले कर घर वापस आ गया । इशा के बा'द वज़ीफ़ा पूरा किया और इसी सोच में जागता रहा कि मुआ़मला क्या है ? अचानक मेरी आंख लग गई । ख़्वाब में सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम अ़र्ज़ किया और हाथ चूमे ।" प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुस्कुराते हुए सलाम का जवाब दिया और कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया : "ऐ रबीअ़ ! आख़िर हम कितने गवाह इस बात पर क़ाइम करें कि तूने **ह़ज** किया है ? तू मानता ही नहीं, सुन जब तूने मेरी औलाद में से एक औ़रत पर सदक़ा किया और अपना ज़ादे राह ईसार कर के अपना ह़ज मुल्तवी कर दिया तो मैं ने **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ की, कि वोह तुझे इस का अच्छा बदला अ़त़ा फ़रमाए । तो **अल्लाह** तआ़ला ने तेरी सूरत का एक **फ़िरिश्ता** बना कर हुक्म दिया कि वोह क़ियामत तक हर साल तेरी त़रफ़ से **ह़ज** किया करे । और दुन्या में तुझे येह बदला दिया है कि छ[6] सो दिरहम के बदले छ[6] सो दीनार अ़त़ा

फ़रमाए, तू अपनी आंखें ठन्डी रख।'' फिर आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोही अल्फ़ाज़ दोहराए ''مَنْ عَامَلَنَا رَبِحَ'' या'नी जो हम से मुआमला करता है, नफ़्अ कमाता है।'' **ह़ज़रते** सय्यिदुना रबीअ़ बिन सलमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि जब मैं सो कर उठा और थैली को खोला, तो उस में छ6 सो अशरफ़ियां ही थीं। (रफ़ीकुल ह़रमैन, स. 287)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ह़दीस (26) ख़ुश ख़बरी सुनाओ

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''**بَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا** **या'नी** ख़ुश ख़बरी सुनाओ और (लोगों को) नफ़रत न दिलाओ।''

(صحيح البخاري، كتاب العلم، باب ما كان النبى صلى الله عليه وسلم يتخولهم الخ، الحديث ٦٩، ج ١، ص ٤٢)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** या'नी लोगों को गुज़श्ता गुनाहों से तौबा करने और नेक आ'माल करने पर ह़क़ तआ़ला की बख़्शिश व रह़मत की ख़ुश ख़बरियां दो। उन गुनाहों की पकड़ पर इस त़रह़ न डराओ कि उन्हें **अल्लाह** की रह़मत से मायूसी हो कर इस्लाम से नफ़रत हो जाए। बहर ह़ाल **इन्ज़ार** और डराना कुछ और है और मायूस कर के **मुतनफ़्फ़िर** (या'नी बद दिल) कर देना कुछ और लिहाज़ा येह ह़दीस उन आयात व अह़ादीस के ख़िलाफ़ नहीं जिन में **अल्लाह** की पकड़ से डराने का हुक्म है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 371)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

# 100 अफ़राद का क़ातिल

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया तुम से पहले एक शख़्स ने 99 क़त्ल किये थे। जब उस ने अहले ज़मीन में सब से बड़े आ़लिम के बारे में पूछा तो उसे एक राहिब के बारे में बताया गया। वोह उस के पास पहुंचा और उस से कहा : "मैं ने निनानवे क़त्ल किये हैं क्या मेरे लिये तौबा की कोई सूरत है ?" राहिब ने उसे मायूस करते हुए कहा : "नहीं।" उस ने उसे भी क़त्ल कर दिया और 100 का अ़दद पूरा कर लिया। फिर उस ने अहले ज़मीन में सब से बड़े आ़लिम के बारे में सुवाल किया तो उसे एक आ़लिम के बारे में बताया गया तो उस ने उस आ़लिम से कहा : "मैं ने सो क़त्ल किये हैं क्या मेरे लिये तौबा की कोई सूरत है ?" उस ने कहा : "हां ! तुम्हारे और तौबा के दरमियान क्या चीज़ रुकावट बन सकती है ? फुलां फुलां अ़लाक़े की त़रफ़ जाओ वहां कुछ लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते हैं उन के साथ मिल कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करो और अपने अ़लाक़े की त़रफ़ वापस न आना क्यूं कि येह बुराई की सर ज़मीन है।"

वोह क़ातिल उस अ़लाक़े की त़रफ़ चल दिया जब वोह आधे रास्ते में पहुंचा तो उसे मौत आ गई। रह़मत और अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उस के बारे में बह़स करने लगे। रह़मत के फ़िरिश्ते कहने लगे : "येह तौबा के दिली इरादे से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ आया था।" और अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते कहने लगे कि इस ने कभी कोई अच्छा काम नहीं किया। तो उन के पास एक फ़िरिश्ता इन्सानी सूरत में आया और उन्हों ने उसे सालिस

मुक़र्रर कर लिया। उस फ़िरिश्ते ने उन से कहा : "दोनों त़रफ़ की ज़मीनों को नाप लो येह जिस ज़मीन के क़रीब होगा उसी का ह़क़दार है।" जब ज़मीन नापी गई तो वोह उस ज़मीन के क़रीब था जिस के इरादे से वोह अपने शहर से निकला था तो रह़मत के फ़िरिश्ते उसे ले गए।

(كتاب التوابين ،توبة من قتل مائة نفس ، ص ٨٥)

**تُوبُوا اِلَى الله!** (या'नी अल्लाह तआ़ला की बारगाह में तौबा करो)

**اَسْتَغْفِرُ الله** (मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूं।)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

## ह़दीस (27) सलाम की अहम्मिय्यत

**ह़ज़रते** सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "**اَلسَّلَامُ قَبْلَ الْكَلَامِ** **या'नी** सलाम गुफ़्त्गू से पहले है।

(جامع الترمذي،ابواب الاستئذان،باب ماجاء في السلام قبل الكلام،الحديث٢٧٠٨،ج٤،ص٣٢١)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** सलाम तीन क़िस्म के हैं "सलामे **इज़्न**" येह घर में दाख़िल होने से पहले इजाज़ते दाख़िला ह़ासिल करने के लिये है। "सलामे **तह़िय्यत**" येह घर में दाख़िल होने और कलाम करने से पहले है। "सलामे **वदाअ़**" येह घर से रुख़्सत होते वक़्त है। यहां (या'नी इस ह़दीस में) सलामे तह़िय्यत मुराद है, येह कलाम से पहले चाहिये ताकि तह़िय्यत बाक़ी रहे जैसे तह़िय्यतुल मस्जिद के नफ़्ल कि वोह बैठने से पहले पढ़े जाएं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 331)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

## ह़दीस (28) तकब्बुर का इ़लाज

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''اَلْبَادِئُ بِالسَّلَامِ بَرِیْءٌ مِّنَ الْكِبْرِ **या'नी** सलाम में पहल करने वाला **तकब्बुर** से दूर हो जाता है।''

(شعب الإيمان، باب في مقاربة اهل الدين... الخ، الحديث: ٨٧٨٦، ج٦، ص٤٣٣)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जो शख़्स मुसल्मानों को सलाम कर लिया करे वोह اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मुतकब्बिर** न होगा उस के दिल में इ़ज्ज़ो नियाज़ होगा येह अ़मल **मुजर्रब** है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 346)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت की आ़दते मुबारका

**ह़ज़रते** मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का बयान है कि ''कोहे भवाली से मेरी त़लबी फ़रमाई जाती है, मैं ब हमराही शहज़ादए असग़र ह़ज़रत मौलाना मौलवी शाह मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ां साह़िब مَدَّظِلُّہُ الْاَقْدَس, बा'दे मग़रिब वहां पहुंचता हूं, शहज़ादा मम्दूह़ अन्दर मकान में जाते हुए येह फ़रमाते हैं ''अभी हु़ज़ूर को आप के आने की इत्तिलाअ़ करता हूं।'' मगर बा वुजूद इस आगाही के कि हु़ज़ूर (या'नी इमामे अहले सुन्नत शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن) तशरीफ़ लाने वाले हैं, तक़्दीमे सलाम (या'नी सलाम में पहल) सरकार ही फ़रमाते हैं, उस वक़्त देखता हूं कि हु़ज़ूर बिल्कुल मेरे पास जल्वा फ़रमा हैं।''

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 96)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (29) मस्जिद में हंसने का नुक़्सान

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "اَلضَّحِکُ فِی الْمَسْجِدِ ظُلْمَةٌ فِی الْقَبْرِ **या'नी** मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा (लाता) है।" (الفردوس بمأ ثور الخطاب، الحديث ٣٧٠٦، ج٢، ص٤١)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ख़याल रहे कि मुस्कुराना अच्छी चीज़ है (और) क़ह्क़हा बुरी चीज़ तबस्सुम रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दते करीमा थी।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 14)

***जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें***
***उस तबस्सुम की आ़दत पे लाखों सलाम***

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (30) क़ह्क़हा की मज़म्मत

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "اَلْقَهْقَهَةُ مِنَ الشَّيْطَانِ، وَالتَّبَسُّمُ مِنَ اللّٰهِ या'नी क़ह्क़हा शैत़ान की त़रफ़ से है और मुस्कुराना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है।" (المعجم الصغير، للطبراني، الحديث ١٠٥٧، ج٢، ص٢١٨)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ह्क़हा** से मुराद आवाज़ के साथ हंसना है। शैत़ान इसे पसन्द करता है और उस पर सुवार हो जाता है। जब कि **तबस्सुम** से मुराद बिग़ैर आवाज़ के थोड़ी मिक़्दार में हंसना है। (فیض القدیر، تحت الحدیث ٦١٩٦، ج٤، ص٧٠٦)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (31) मिस्वाक की फ़ज़ीलत

**उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا रिवायत करती हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''اَلسِّوَاکُ مَطْھَرَۃٌ لِلْفَمِ مَرْضَاۃٌ لِّلرَّب **या'नी** मिस्वाक में मुंह की **पाकीज़गी** और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी का सबब है।''

(سنن النسائي، أبواب الطهارة وسننها، باب السواك، ج١،ص١٠)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** शरीअ़त में **मिस्वाक** से मुराद वोह लकड़ी है जिस से दांत साफ़ किये जाएं। **सुन्नत** येह है कि येह किसी फूल या फलदार दरख़्त की न हो कड़वे दरख़्त की हो। मोटाई छुंगली के बराबर हो, लम्बाई बालिश्त से ज़ियादा न हो। दांतों की चौड़ाई में की जाए न कि लम्बाई में। बे दांत वाले इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें मसूढ़ों पर उंगली फैर लिया करें। मिस्वाक इतने मक़ाम पर सुन्नत है : वुज़ू में, क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते वक़्त, दांत पीले होने पर, भूक या देर तक ख़ामोशी या बे ख़्वाबी की वजह से मुंह से बदबू आने पर। (مراۃ المناجیح،کتاب الطہارۃ،باب السواک،ج۱،ص۲۷۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (32) जमाअ़त की फ़ज़ीलत

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''صَلَاۃُ الْجَمَاعَۃِ تَفْضُلُ صَلَاۃَ الْفَذِّ بِسَبْعٍ وَّعِشْرِیْنَ دَرَجَۃً **या'नी**

बा जमाअ़त नमाज़ अदा करना, तन्हा नमाज़ पढ़ने से सत्ताईस दरजे ज़ियादा **फ़ज़ीलत** रखती है।''

(صحيح البخاري، كتاب الأذان، باب فضل صلاة الجماعة، الحديث ٦٤٥،ج١،ص٢٣٢)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आ़म रिवायात में येही है कि नमाज़े बा जमाअ़त ब निस्बत तन्हा के 25 दरजे ज़ाइद है। मगर बा'ज़ रिवायतों में सत्ताईस दरजे भी आया है। बल्कि एक रिवायत में 36 दरजे भी वारिद है। बा'ज़ में 50 भी। उ़लमा ने इस की मुख़्तलिफ़ तौजीहात की हैं। सब में उ़म्दा तौजीह येह है कि येह नमाज़ी और वक़्त और ह़ालत के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ है। (نزهة القاری شرح صحیح البخاری، ج۲،ص۱۷۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

## 25 मर्तबा नमाज़ अदा की

**इमामे आ'ज़म** अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के शागिर्द **ह़ज़रते** सय्यिदुना मुह़म्मद बिन समाआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक सो तीस बरस की उ़म्र पाई आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रोज़ाना दो सो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ा करते थे। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''मुसल्सल **40** बरस तक मेरी एक मर्तबा के इ़लावा कभी तक्बीरे ऊला फ़ौत नहीं हुई। जिस दिन मेरी वालिदा का इन्तिक़ाल हुवा। उस दिन एक वक़्त की जमाअ़त छूट गई तो मैं ने इस ख़याल से कि जमाअ़त की नमाज़ का 25 गुना सवाब ज़ियादा मिलता है। उस नमाज़ को मैं ने अकेले 25 मर्तबा पढ़ा। फिर मुझे कुछ गुनूदगी आ गई। तो किसी ने ख़्वाब में आ कर कहा, 25 नमाज़ें तो तुम ने पढ़ लीं मगर फ़िरिश्तों की ''**आमीन**'' का क्या करोगे ?''

(تهذيب التهذيب،حرف الميم،من اسمه محمد،الرقم٦١٧٢،ج٧،ص١٩١)

ह़दीस शरीफ़ में है कि इमाम जब ''غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْھِمْ وَلَا الضَّآلِّیْن'' कहे तो तुम लोग ''**आमीन**'' कहो, जिस की ''**आमीन**'' फ़िरिश्तों की ''**आमीन**'' के साथ होती है उस के गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं।

(صحیح بخاری، کتاب التفسیر، الحدیث ٤٤٧٥، ج٣، ص١٦٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## नमाज़ की फ़िक्र

**एक बार** शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ जश्ने विलादत के मदनी जुलूस में आ़शिक़ाने रसूल के हम्राह शरीक थे। सलातो सलाम पढ़ता और मरह़बा या मुस्त़फ़ा के ना'रे लगाता आ़शिक़ाने रसूल का ठाठें मारता समुन्दर रवां दवां था। अचानक एक शख़्स आगे बढ़ा और उस ने अफ़्सा की भरी शीशी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ पर उन्डेल दी ? आप دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ के मुहं से बे साख़्ता ''या ग़ौस पाक'' का ना'रा बुलन्द हो गया ? यूं मह़सूस हो रहा था कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ सख़्त परेशान हो गए हैं। चन्द लम्हों के बा'द आप دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ ने फ़रमाया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुआ़फ़ फ़रमाए ! उस इस्लामी भाई ने मेरी बहोत दिल आज़ारी की, वोह बे चारे जानता नहीं था कि अफ़्सा जिस्म पर लगने की सूरत में वुज़ू का क्या मस्अला है। बिल आख़िर न चाहते हुए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ ने जुलूस तर्क फ़रमाया, बड़ी तगो दो के बा'द अफ़्शां से पीछा छुड़ाया और नमाज़े अ़स्र वक़्त में अदा फ़रमाई।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (33)    चुग़ुल ख़ोर की मज़म्मत

**ह़ज़रते** सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : **''لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَّاتٌ'' या'नी** चुग़ुल ख़ोर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।''

(صحیح البخاري، کتاب الآداب، باب مایکرہ من النمیمۃ، الحدیث ٦٠٥٦، ج٤، ص١١٥)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़त्तात** वोह शख़्स है जो दो मुख़ालिफ़ों की बातें छुप कर सुने और फिर उन्हें ज़ियादा लड़ाने के लिये एक की बात दूसरे तक पहुंचाए। अगर येह शख़्स ईमान पर मरा तो जन्नत में अव्वलन न जाएगा बा'द में जाए तो जाए अगर कुफ़्र पर मरा तो कभी वहां न जाएगा। (मुस्लिम शरीफ़ में **नम्माम** का लफ़्ज़ इस्ति'माल हुवा है) जो दो त़रफ़ा झूटी बातें लगा कर सुल्ह़ करा दे वोह नम्माम नहीं मुस्लेह़ है नम्माम वोह है जो लड़ाई व फ़साद के लिये येह ह़रकत करे।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 452)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !    صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## चुग़ली किसे कहते हैं ?

**शैख़े त़रीक़त,** अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने रिसाले **''बुरे ख़ातिमे के अस्बाब''** के सफ़ह़ा 9 पर लिखते हैं : **अ़ल्लामा** ऐ़नी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इमाम नववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से नक़्ल फ़रमाया कि किसी की बात ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचाने के इरादे से दूसरों को पहुंचाना **चुग़ली** है।

(عمدۃ القاری تحت الحدیث ٢١٦ ج٢ ص٥٩٤ دار الفکر بیروت)

# क्या हम चुग़ली से बचते हैं ?

**अफ़्सोस !** अक्सर लोगों की गुफ़्त्गू में आज कल **ग़ीबत** व **चुग़ली** का सिल्सिला बहुत ज़ियादा पाया जाता है। दोस्तों की बैठक हो या मज़्हबी इज्तिमाअ़ के बा'द जमघट, शादी की तक़रीब हो या ता'ज़ियत की निशस्त, किसी से मुलाक़ात हो या फ़ोन पर बात, चन्द मिनट भी अगर किसी से गुफ़्त्गू की सूरत बने और दीनी मा'लूमात रखने वाला कोई हुस्सास फ़र्द अगर उस गुफ़्त्गू की "**तश्ख़ीस**" करे तो शायद अक्सर मजालिस में दीगर गुनाहों भरे अल्फ़ाज़ के साथ साथ वोह दरजनों "चुग़्लियां" भी साबित कर दे। हाए ! हाए ! हमारा क्या बनेगा ! ! ! एक बार फिर इस ह़दीसे पाक पर ग़ौर कर लीजिये : "चुग़ल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा।" काश ! हमें ह़क़ीक़ी मा'नों में **ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना** नसीब हो जाए, काश ! ज़रूरत के सिवा कोई लफ़्ज़ ज़बान से न निकले, ज़ियादा बोलने वाले और दुन्यवी दोस्तों के झुरमट में रहने वाले का **ग़ीबत** और बिल ख़ुसूस **चुग़ली** से बचना बेह़द दुश्वार है। आह ! आह ! आह ! ह़दीसे पाक में है : "जिस शख़्स की गुफ़्त्गू ज़ियादा हो उस की ग़लतियां भी ज़ियादा होती हैं और जिस की ग़लतियां ज़ियादा हों उस के गुनाह ज़ियादा होते हैं और जिस के गुनाह ज़ियादा हों वोह जहन्नम के ज़ियादा लाइक़ है।"

(حلية الاولياء ج۳ ص۸۷۔۸۸ رقم ۳۲۷۸ دارالكتب العلمية بيروت) (बुरे ख़ातिमे के अस्बाब, स. 9)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

# चुग़ली से तौबा

**ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के

बारे में मरवी है कि एक शख़्स उन के पास हाज़िर हुवा और उस ने किसी दूसरे के बारे में कोई बात ज़िक्र की। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया अगर तुम चाहो तो हम तुम्हारे मुआमले में ग़ौर करें अगर तुम **झूटे** हुए तो इस आयत के मिस्दाक़ होगे :

اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَیَّنُوْۤا
(پ۲٦، الحجرات:٦)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तहक़ीक़ कर लो।

और अगर तुम **सच्चे** हुए तो इस आयत के मिस्दाक़ हो जाओगे :

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِیْمٍ ﴿۱۱﴾
(پ۲۹،القلم:۱۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बहुत ता'ने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला।

**और** अगर तुम चाहो तो हम तुम्हें मुआफ़ कर दें। उस ने अ़र्ज़ की : अमीरुल मुअमिनीन ! मुआफ़ कर दीजिये आयिन्दा मैं ऐसा नहीं करूंगा।

(احیاء علوم الدین،کتاب آفات اللسان،ج۳،ص۱۹۳ )

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## चुग़ुल ख़ोर ग़ुलाम

**ह़ज़रते** सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने ग़ुलाम बेचा और ख़रीदार से कहा : ''इस में चुग़ुल ख़ोरी के इ़लावा कोई ऐ़ब नहीं।'' उस ने कहा : ''मुझे मन्ज़ूर है।'' और उस ग़ुलाम को ख़रीद लिया। ग़ुलाम चन्द दिन तो ख़ामोश रहा फिर अपने मालिक की बीवी से कहने लगा : ''मेरा आक़ा तुझे पसन्द नहीं करता और दूसरी औ़रत लाना चाहता है, जब तुम्हारा ख़ावन्द सो रहा हो तो

उस्तरे के साथ उस की गुद्दी के चन्द बाल मूंड लेना ताकि मैं कोई मन्तर करूं, इस त़रह़ वोह तुम से मह़ब्बत करने लगेगा।'' और दूसरी त़रफ़ उस के शोहर से जा कर कहा : तुम्हारी बीवी ने किसी को दोस्त बना रखा है और तुझे **क़त्ल** करना चाहती है, तुम झूट मूट के सो जाना ताकि तुम्हें ह़क़ीक़ते ह़ाल मा'लूम हो जाए।'' वोह शख़्स बनावटी त़ौर पर सो गया तो औ़रत उस्तुरा ले कर आई। वोह शख़्स समझा कि वोह इसे **क़त्ल** करने के लिये आई है। चुनान्चे वोह उठा और अपनी बीवी को **क़त्ल** कर दिया। जब औ़रत के घर वाले आए तो उन्हों ने इसे **क़त्ल** कर दिया और इस त़रह़ उस **चुग़ुल ख़ोर** ग़ुलाम की वजह से दो क़बीलों के दरमियान लड़ाई शुरूअ़ हो गई। (احیاء علوم الدین، کتاب آفات اللسان، ج۳،ص۱۹۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

## ह़दीस (34) रज़्ज़ाक़ का करम

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''اِنَّ الرِّزْقَ لَیَطْلُبُ الْعَبْدَ کَمَا یَطْلُبُہٗ اَجَلُہ **या'नी** रोज़ी बन्दे को ऐसे **तलाश** करती है जैसे उसे उस की मौत **तलाश** करती है।'' (حلیۃ الاولیاء، رقم ۷۹۰۸، ج٦، ص۸۹)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मक़्सद येह है कि मौत को तुम तलाश करो या न करो बहर ह़ाल तुम्हें पहुंचेगी यूंही तुम रिज़्क़ को तलाश करो या न करो ज़रूर पहुंचेगा। हां ! रिज़्क़ की तलाश सुन्नत है (और) मौत की तलाश मम्नूअ़, मगर हैं दोनों यक़ीनी।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 126)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

# भुना हुवा हरन

**हज़रते** सय्यिदुना अबू इब्राहीम यमानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : "एक मर्तबा हम चन्द रुफ़क़ा हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم की हमराही में समुन्दर के क़रीब एक वादी की तरफ़ गए। हम समुन्दर के किनारे किनारे चल रहे थे कि रास्ते में एक पहाड़ आया जिसे जबले "**कफ़र फ़ैर**" कहते हैं। वहां हम ने कुछ देर क़ियाम किया और फिर सफ़र पर रवाना हो गए। रास्ते में एक घना जंगल आया जिस में ब कसरत खुश्क दरख़्त और खुश्क झाड़ियां थीं। शाम क़रीब थी, सर्दियों का मौसिम था। हम ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की बारगाह में अर्ज़ की : "हुज़ूर ! अगर आप मुनासिब समझें तो आज रात हम साहिले समुन्दर पर गुज़ार लेते हैं। यहां इस क़रीबी जंगल में खुश्क लकड़ियां बहुत हैं। हम लकड़ियां जम्अ कर के आग रोशन कर लेंगे इस तरह हम सर्दी और दरिन्दों वग़ैरा से महफ़ूज़ रहेंगे।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "ठीक है जैसे तुम्हारी मरज़ी।" चुनान्चे हमारे कुछ दोस्तों ने जंगल से खुश्क लकड़ियां इकठ्ठी कीं और एक शख़्स को आग लेने के लिये एक क़रीबी क़ल्ए की तरफ़ भेज दिया। जब वोह आग ले कर आया तो हम ने जम्अ शुदा लकड़ियों में आग लगा दी और सब आग के इर्द गिर्द बैठ गए और हम ने खाने के लिये रोटियां निकाल लीं। अचानक हम में से एक शख़्स ने कहा : "देखो इन लकड़ियों से कैसे अंगारे बन गए हैं, ऐ काश ! हमारे पास गोश्त होता तो हम उसे इन अंगारों पर भून लेते।" हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम इब्ने

अदहम عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡاَعۡظَم ने उस की येह बात सुन ली और फ़रमाने लगे : ‘‘हमारा पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ इस बात पर क़ादिर है कि तुम्हें इस जंगल में **ताज़ा गोश्त** खिलाए ।’’

अभी आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ येह बात फ़रमा ही रहे थे कि अचानक एक त़रफ़ से शेर नुमूदार हुवा जो एक फ़र्बा हरन के पीछे भाग रहा था। हरन का रुख़ हमारी ही त़रफ़ था। जब हरन हम से कुछ फ़ासिले पर रह गया तो शेर ने उस पर छलांग लगाई और उस की गरदन पर शदीद ह़म्ला किया जिस से वोह तड़पने लगा। येह देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡاَعۡظَم उठे और उस हरन की त़रफ़ लपके। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को आता देख कर शेर हरन को छोड़ कर पीछे हट गया। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : ‘‘येह रिज़्क़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमारे लिये भेजा है। चुनान्चे हम ने हरन को **ज़ब्ह़** किया और उस का गोश्त अंगारों पर भून भून कर **खाते** रहे और शेर दूर बैठा हमें देखता रहा।’’ (عیون الحکایات،حکایۃ الحادیۃ والسبعون بعد المائۃ،ص۱۸۲)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

**اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

## ह़दीस (35) ह़या ईमान से है

हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ‘‘**اَلۡحَیَاءُ مِنَ الۡاِیۡمَانِ** **या’नी** ह़या **ईमान** से है।’’

(صحیح مسلم، کتاب الإیمان،باب بیان عدد شعب الإیمان... الخ،الحدیث ۳۶،ص ۴۰)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** शर्मो ह़या ईमान का रुक्ने आ’ला है। दुन्या वालों से ह़या दुन्यावी बुराइयों से रोक देती है। दीन वालों से

ह़या दीनी बुराइयों से रोक देती है। अल्लाह रसूल से शर्मो ह़या तमाम बद अ़क़ीदगियों बद अ़मलियों से बचा लेती है। ईमान की इमारत इसी शर्मो ह़या पर क़ाइम है। दरख़्ते ईमान की जड़ मोमिन के दिल में रहती है (जब कि) इस की शाख़ें जन्नत में हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 641)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## बा ह़या नौ जवान

**अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**बा ह़या नौ जवान**" के सफ़ह़ा 1 पर लिखते हैं :

बसरा में एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه "मिस्की" के नाम से मश्हूर थे। "मुश्क" को अ़रबी में "मिस्क" कहते हैं। लिहाज़ा मिस्की के मा'ना हुए "**मुश्कबार**" या'नी मुश्क की ख़ुश्बू में बसा हुवा। वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه हर वक़्त मुश्कबार व ख़ुश्बूदार रहा करते थे। यहां तक कि जिस रास्ते से गुज़र जाते वोह रास्ता भी महक उठता। जब दाख़िले मस्जिद होते तो उन की ख़ुश्बू से लोगों को मा'लूम हो जाता कि ह़ज़रते मिस्की رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तशरीफ़ ले आए हैं। किसी ने अ़र्ज़ किया, हु़ज़ूर ! आप को ख़ुश्बू पर कसीर रक़म ख़र्च करनी पड़ती होगी। फ़रमाया, "मैं ने कभी ख़ुश्बू ख़रीदी न लगाई। मेरा वाक़िआ़ अ़जीबो ग़रीब है :

मैं बग़दादे **मुअ़ल्ला** के एक ख़ुशह़ाल घराने में पैदा हुवा। जिस त़रह़ उमरा अपनी औलाद को ता'लीम दिलवाते हैं मेरी भी इसी त़रह़ ता'लीम हुई। मैं बहुत ख़ूब सूरत और **बा ह़या** था। मेरे वालिद साह़िब से किसी ने कहा, "इसे बाज़ार में बिठाओ ताकि येह लोगों से घुल मिल जाए और इस की ह़या कुछ कम हो।" चुनान्चे मुझे एक बज़्ज़ाज़ (या'नी

कपड़ा बेचने वाले) की दुकान पर बिठा दिया गया। एक रोज़ एक बुढ़िया ने कुछ क़ीमती कपड़े निकलवाए, फिर बज़्ज़ाज़ (या'नी कपड़े वाले) से कहा, "मेरे साथ किसी को भेज दो ताकि जो पसन्द हों उन्हें लेने के बा'द क़ीमत और बक़िय्या कपड़े वापस लाए।" बज़्ज़ाज़ ने मुझे उस के साथ भेज दिया। बुढ़िया मुझे एक अ़ज़ीमुश्शान मह़ल में ले गई और आरास्ता कमरे में भेज दिया। क्या देखता हूं कि एक ज़ेवरात से आरास्ता ख़ुश लिबास जवान लड़की तख़्त पर बिछे हुए **मुनक़्क़श** क़ालीन पर बैठी है, तख़्त व फ़र्श सब के सब ज़र्री हैं और इस क़दर नफ़ीस कि ऐसे मैं ने कभी नहीं देखे थे। मुझे देखते ही उस लड़की पर शैत़ान ग़ालिब आया और वोह एक दम मेरी त़रफ़ लपकी और छेड़ख़ानी करते हुए "मुंह काला" करवाने के दर पै हुई। मैं ने घबरा कर कहा, "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर !" मगर उस पर शैत़ान पूरी त़रह़ मुसल्लत़ था। जब मैं ने उस की ज़िद देखी तो गुनाह से बचने की एक तज्वीज़ सोच ली और उस से कहा, मुझे इस्तिन्जा ख़ाने जाना है। उस ने आवाज़ दी तो चारों त़रफ़ से लौंडियां आ गईं, उस ने कहा, "अपने आक़ा को बैतुल ख़ला में ले जाओ।" मैं जब वहां गया तो भागने की कोई राह नज़र नहीं आई, मुझे उस औ़रत के साथ "मुंह काला" करते हुए अपने रब عَزَّوَجَلَّ से ह़या आ रही थी और मुझ पर अ़ज़ाबे जहन्नम के ख़ौफ़ का ग़लबा था। चुनान्चे एक ही रास्ता नज़र आया और वोह येह कि मैं ने इस्तिन्जा ख़ाने की नजासत से अपने हाथ मुंह वग़ैरा सान लिये और ख़ूब आंखें निकाल कर उस कनीज़ को डराया जो बाहर रुमाल और पानी लिये खड़ी थी, मैं जब दीवानों की त़रह़ चीख़ता हुवा उस की त़रफ़ लपका तो वोह डर कर भागी और उस ने

पागल, पागल का शोर मचा दिया। सब लौंडियां इकठ्ठी हो गई और उन्हों ने मिल कर मुझे एक टाट में लपेटा और उठा कर एक बाग़ में डाल दिया। मैं ने जब यक़ीन कर लिया कि सब जा चुकी हैं तो उठ कर अपने कपड़े और बदन को धो कर पाक कर लिया और अपने घर चला गया मगर किसी को येह बात नहीं बताई। उसी रात मैं ने ख़्वाब में देखा कि कोई कह रहा है, "तुम को ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से क्या ही ख़ूब मुनासबत है" और कहता है कि "क्या तुम मुझे जानते हो?" मैं ने कहा, "नहीं।" तो उन्हों ने कहा, "मैं जिब्रईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हूं।" इस के बा'द उन्हों ने मेरे मुंह और जिस्म पर अपना हाथ फैर दिया। उसी वक़्त से मेरे जिस्म से मुश्क की बेहतरीन ख़ुश्बू आने लगी। येह ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दस्ते मुबारक की ख़ुश्बू है।"

(رَوْضُ الرَّیاحِین ص ٣٣٤ دار الکتب العلمیة بیروت)

**मदीना :** ह़या के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَه का रिसाला "**बा ह़या नौ जवान**" मक्तबतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ह़दीस (36) साक़िये कौसर صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का फ़रमान

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "**اِنَّ سَاقِیَ الْقَوْمِ آخِرُھُمْ شُرْبًا** या'नी

क़ौम को पानी पिलाने वाला, सब से आख़िर में पीता है।"

(صحیح مسلم،کتاب المساجد،باب قضاء الصلاۃ الفائتۃ... الخ،الحدیث ۶۸۱،ص ۳۴۴)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** क़ानून येह है कि पिलाने वाला पीछे पिये, खिलाने वाला पीछे खाए। हम हैं पिलाने वाले इस लिये हम तुम्हारे बा'द पियेंगे। ख़याल रहे कि रब तआला की त़रफ़ से क़ासिम हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم थे और ता क़ियामत हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 224)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ह़दीस (37) आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का महीना

**उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "**شَعْبَانُ شَهْرِىْ وَ رَمَضَانُ شَهْرُاللّٰه या'नी** शा'बान मेरा महीना है और रमज़ान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महीना है।"

(الجامع الصغیر، للسیوطی، الحدیث ۴۸۸۹، ص ۳۰۱)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने शा'बान को इस लिये अपना महीना फ़रमाया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم इस महीने में रोज़े रखा करते थे ह़ालां कि येह रोज़े आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم पर वाजिब नहीं थे। और रमज़ान को इस लिये **अल्लाह** तआ़ला का महीना फ़रमाया कि उस ने इस महीने के रोज़े मुसल्मानों पर फ़र्ज़ किये हैं। (فیض القدیر،تحت الحدیث ۴۸۸۹،ج ۴،ص ۲۱۳)

## शा'बान की तजल्लियात व बरकात

**अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**आक़ा का महीना**" के सफ़्हा 4 पर लिखते हैं : लफ़्ज़ "**शा'बान**" में **पांच** हुरूफ़ हैं, ش،ع،ب،ا،ن । **सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म, मह़बूबे सुब्ह़ानी, क़िन्दीले नूरानी, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी** قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی नक़्ल फ़रमाते हैं "ش" से मुराद **शरफ़** या'नी बुज़ुर्गी, "ع" से मुराद **उ़लुव्व** या'नी बुलन्दी, "ب" से मुराद **बिर** या'नी भलाई व एह़सान, "ا" से मुराद **उल्फ़त** और "ن" से मुराद **नूर** है तो येह तमाम चीज़ें **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों को इस महीने में अ़ता फ़रमाता है, येह वोह महीना है जिस में नेकियों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, बरकात का नुज़ूल होता है, ख़त़ाएं तर्क कर दी जाती हैं और गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा किया जाता है, और **ख़ैरुल बरिय्यह, सय्यिदुल वरा जनाबे मुह़म्मद मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक की कसरत की जाती है, और येह नबिय्ये मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर **दुरूद भेजने का महीना है ।**

(غنية الطالبين، ج١، ص٢٤٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ह़दीस (38) फ़ितना बाज़ की मज़म्मत

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "**اَلْفِتْنَةُ نَائِمَةٌ لَّعَنَ اللّٰهُ مَنْ اَيْقَظَهَا** **या'नी** फ़ितना सो रहा है, इस के जगाने वाले पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत ।"

(الجامع الصغير، الحديث ٥٩٧٥، ص ٣٧٠)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** किसी दीनी फ़ाएदे के बिग़ैर लोगों को इज़्तिराब, इख़्तिलाफ़, मुसीबत और आज़माइश में मुब्तला कर के निज़ामे ज़िन्दगी को बिगाड़ देना "फ़ितना" कहलाता है। (الحديقه الندية ج ٢،ص ١٣٦) लिहाज़ा हर वोह चीज़ जो मुसल्मानों के दरमियान फ़ितने, शर, अ़दावत और बुग़्ज़ का बाइ़स बने, हमें उस से बचना चाहिये। फ़ितने को कुरआने पाक में क़त्ल से ज़ियादा सख़्त कहा गया है, अगर इसी बात पर ग़ौर कर लिया जाए तो फ़ितने से बचने के लिये काफ़ी है। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ (پ٢،البقرة:١٩١)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और इन का फ़साद तो क़त्ल से भी सख़्त है।

इमाम बैज़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़ितने के क़त्ल से ज़ियादा सख़्त व बुरा होने की वजह येह बयान करते हैं कि "चूंकि क़त्ल के मुक़ाबले में फ़ितने की तक्लीफ़ ज़ियादा सख़्त और इस का रन्जो अलम ज़ियादा देर तक क़ाइम रहता है इसी लिये इस को क़त्ल से ज़ियादा सख़्त फ़रमाया गया।" (الحديقة الندية ، ج ٢،ص ١٥٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## ह़दीस (39) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत करना

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू ज़र رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "اَفْضَلُ الْاَعْمَالِ الْحُبُّ فِى اللهِ وَالْبُغْضُ فِى اللهِ **या'नी** सब से बेहतर अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये **मह़ब्बत** करना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये **दुश्मनी** करना है।" (سنن أبي داود، كتاب السنة،باب مجانبة اهل الأهواء ،الحديث ٤٥٩٩ ،ج ٤،ص ٢٦٤)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत का मत़्लब येह है कि किसी से इस लिये मह़ब्बत की जाए कि वोह दीनदार है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अ़दावत का मत़्लब येह है कि किसी से अ़दावत हो तो इस बिना पर हो कि वोह दीन का दुश्मन है या दीनदार नहीं। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 1, स. 295) इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं अगर कोई शख़्स बावर्ची से इस लिये मह़ब्बत करता है कि उस से अच्छा खाना पकवा कर फ़ुक़रा को बांटे तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत है और अगर आ़लिमे दीन से इस लिये मह़ब्बत करता है कि उस से इ़ल्मे दीन सीख कर दुन्या कमाए तो येह दुन्या के लिये मह़ब्बत है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 54)

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "येह बात ईमान से है कि एक शख़्स दूसरे से फ़क़त़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत करे उस में दिये जाने वाले माल का दख़्ल न हो तो ऐसी मह़ब्बत ईमान (का ह़िस्सा) है।"

(المعجم الاوسط ، رقم الحديث ٧٢١٤، ج٥، ص٢٤٥)

इमाम नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** और रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में ज़िन्दा और इन्तिक़ाल कर जाने वाले औलिया व सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की मह़ब्बत भी शामिल है और **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अफ़्ज़ल तरीन मह़ब्बत येह है उन के अह़काम पर अ़मल और नवाही से इज्तिनाब किया जाए।"

(شرح مسلم للنووی، کتاب البر والصله، باب المرء مع من احب، ج٢ ص ٣٣١)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे अकाबिरीन اَلْحُبُّ فِی اللّٰہِ وَالْبُغْضُ فِی اللّٰہِ की चलती फिरती तस्वीर थे। चुनान्चे ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने जंगे उहुद में अपने बाप जर्राह़ को **क़त्ल** किया और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने रोज़े बद्र अपने बेटे अ़ब्दुर्रह़मान को **मुबारज़त** (या'नी मुक़ाबले) के लिये त़लब किया लेकिन रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें इस जंग की इजाज़त न दी और सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने अपने भाई अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मैर को **क़त्ल** किया और ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने अपने मामूं आ़स बिन हश्शाम बिन मुग़ीरा को रोज़े बद्र **क़त्ल** किया और ह़ज़रते अ़ली बिन अबी त़ालिब व ह़म्ज़ा व अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھُم ने रबीआ़ के बेटों उ़त्बा और शैबा को और वलीद बिन उ़त्बा को बद्र में **क़त्ल** किया जो इन के रिश्तेदार थे ख़ुदा और रसूल पर ईमान लाने वालों को क़राबत और रिश्तेदारी का क्या पास। (تفسیر خزائن العرفان، المجادلہ، تحت الآیۃ ۲۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی محمَّد

## ह़दीस (40) नमाज़ क़ज़ा करने का वबाल

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''مَنْ تَرَکَ صَلَاۃً مُتَعَمِّدًا کُتِبَ اسْمُہٗ عَلٰی بَابِ النَّارِ فِیْمَنْ یَدْخُلُھَا'' **या'नी** जो कोई जान बूझ कर एक नमाज़ भी छोड़ देता है, उस का नाम जहन्नम के उस दरवाज़े पर लिख दिया जाएगा जिस से वोह जहन्नम में दाख़िल होगा।'' (حلیۃ الاولیاء، رقم ۱۰۵۹۰، ج۷، ص۲۹۹)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जहन्नमियों के बारे में इर्शाद फ़रमाया :

مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ۝ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ۝ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ۝ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ۝

(پ٢٩، المدثر:٤٢تا٤٥)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें क्या बात दोज़ख़ में ले गई वोह बोले हम नमाज़ न पढ़ते थे और मिस्कीन को खाना न देते थे और बेहूदा फ़िक्र वालों के साथ बेहूदा फ़िक्रें करते थे ।

## कुछ दिन के लिये नमाज़ छोड़ सकते हैं ?

**ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं कि जब मेरी आंखों की सियाही बाक़ी रहने के बा वुजूद मेरी बीनाई जाती रही तो मुझ से कहा गया : "हम आप का इ़लाज करते हैं क्या आप कुछ दिन नमाज़ छोड़ सकते हैं ?" तो मैं ने कहा : "नहीं, क्यूं कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने नमाज़ छोड़ी तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह उस पर ग़ज़ब फ़रमाएगा ।"

(مجمع الزوائد، کتاب الصلاۃ،باب فی تارك الصلاۃ،الحدیث:١٦٣٢،ج ٢،ص ٢٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

# 40 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1...... اَوۡلَی النَّاسِ بِیۡ یَوۡمَ الۡقِیَامَۃِ اَکۡثَرُہُمۡ عَلَیَّ صَلَاۃً .

2...... صَلُّوۡا عَلَیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡکُمۡ .

3...... مَنۡ صَلّٰی عَلَیَّ وَاحِدَۃً صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ عَشۡرَ صَلَوٰتٍ وَ حُطَّتۡ عَنۡہُ عَشۡرُ خَطِیَّاتٍ وَرُفِعَتۡ لَہٗ عَشۡرُ دَرَجَاتٍ .

4...... اِنَّمَاالۡاَعۡمَالُ بِالنِّیَّاتِ .

5...... نِیَّۃُ الۡمُؤۡمِنِ خَیۡرٌ مِّنۡ عَمَلِہٖ .

6...... اُطۡلُبُوۡا الۡعِلۡمَ وَلَوۡ بِالصِّیۡنِ .

7...... خَیۡرُکُمۡ مَنۡ تَعَلَّمَ الۡقُرۡاٰنَ وَعَلَّمَہٗ .

8...... طَلَبُ الۡعِلۡمِ فَرِیۡضَۃٌ عَلٰی کُلِّ مُسۡلِمٍ .

9...... مَنۡ طَلَبَ الۡعِلۡمَ تَکَفَّلَ اللّٰہُ لَہٗ بِرِزۡقِہٖ .

10...... مَنۡ خَرَجَ فِیۡ طَلَبِ الۡعِلۡمِ فَھُوَ فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ حَتّٰی یَرۡجِعَ .

11...... مَنۡ طَلَبَ الۡعِلۡمَ کَانَ کَفَّارَۃً لِّمَا مَضٰی .

12...... مَنۡ یُّرِدِ اللّٰہُ بِہٖ خَیۡرًا یُّفَقِّھۡہُ فِی الدِّیۡنِ .

13...... مَنۡ صَمَتَ نَجَا .

14...... مَنۡ دَلَّ عَلٰی خَیۡرٍ فَلَہٗ مِثۡلُ اَجۡرِ فَاعِلِہٖ .

15...... بَلِّغُوۡا عَنِّیۡ وَلَوۡ اٰیَۃً .

16...... اَلدُّعَاءُ مُخُّ الۡعِبَادَۃِ .

17...... اَلدُّعَاءُ یَرُدُّ الۡبَلَاءَ .

18...... مَنۡ غَشَّ فَلَیۡسَ مِنَّا .

19...... اَلنَّدَمُ تَوبَةٌ .

20...... اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنبِ كَمَنْ لَّا ذَنبَ لَهٗ .

21...... اَلصَّلاةُ عِمادُ الدِّيْنِ .

22...... مَنْ زَارَ قَبرِىْ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِىْ .

23...... عَذَابُ الْقَبرِ حَقٌّ .

24...... اَلدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ .

25...... اَلْجُمُعَةُ حَجُّ الْمَسَاكِيْنِ .

26...... بَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا .

27...... اَلسَّلَامُ قَبْلَ الْكَلَامِ .

28...... اَلْبَادِئُ بِالسَّلَامِ بَرِئٌ مِّنَ الْكِبْرِ .

29...... اَلضَّحِكُ فِى الْمَسْجِدِ ظُلْمَةٌ فِى الْقَبْرِ .

30...... اَلْقَهْقَهَةُ مِنَ الشَّيْطَانِ، وَالتَّبَسُّمُ مِنَ اللّٰهِ .

31...... اَلسِّوَاكُ مَطْهَرَةٌ لِلْفَمِ مَرْضَاةٌ لِّلرَّبِّ .

32...... صَلاةُ الْجَمَاعَةِ تَفْضُلُ صَلاةَ الْفَذِّ بِسَبْعٍ وَّعِشْرِيْنَ دَرَجَةً .

33...... لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَّاتٌ .

34...... اِنَّ الرِّزْقَ لَيَطْلُبُ الْعَبْدَ كَمَا يَطْلُبُهٗ اَجَلُهٗ .

35...... اَلْحَيَاءُ مِنَ الْاِيْمَانِ .

36...... اِنَّ سَاقِيَ الْقَوْمِ آخِرُهُمْ شُرْبًا .

37...... شَعْبَانُ شَهْرِىْ، وَ رَمَضَانُ شَهْرُ اللّٰهِ .

38...... اَلْفِتْنَةُ نَائِمَةٌ لَّعَنَ اللّٰهُ مَنْ اَيْقَظَهَا .

39...... اَفْضَلُ الْاَعْمَالِ الْحُبُّ فِى اللّٰهِ وَالْبُغْضُ فِى اللّٰهِ .

40...... مَنْ تَرَكَ صَلَاةً مُتَعَمِّدًا كُتِبَ اسْمُهٗ عَلٰى بَابِ النَّارِ فِيْمَنْ يَدْخُلُهَا .

# ماخذ و مراجع


| | | | |
|---|---|---|---|
| (۱) | قران مجید | کلامِ باری تعالٰی | ضیاء القران پبلی کیشنز |
| (۲) | کَنزُالْاِیمَان فِی تَرجَمَۃِ الْقُرْاٰن | اعلیٰحضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ | ضیاء القران پبلی کیشنز |
| (۳) | رُوحُ الْمَعَانِی | علامہ ابو الفضل شہاب الدین آلوسی متوفّٰی ۱۲۷۰ھ | دار احیاء التراث العربی بیروت |
| (۴) | صَحِیحُ الْبُخَارِی | امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفّٰی ۲۵۶ھ | دار الکتب العلمیۃ بیروت |
| (۵) | صحیح مسلم | امام مسلم بن حجاج بن مسلم القشیری متوفّٰی ۲۶۱ھ | دار ابن حزم بیروت |
| (۶) | سُنَن الترمذی | امام ابو عیسٰی محمد بن عیسٰی الترمذی متوفّٰی ۲۷۹ھ | دار الفکر بیروت |
| (۷) | سُنَنُ ابنِ ماجۃ | امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید القزوینی متوفّٰی ۲۷۳ھ | دار الفکر بیروت |
| (۸) | اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر | امام سلیمان بن احمد طبرانی متوفّٰی ۳۶۰ھ | دار احیاء التراث العربی |
| (۹) | اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط | امام سلیمان بن احمد طبرانی متوفّٰی ۳۶۰ھ | دار الکتب العلمیۃ بیروت |
| (۱۰) | شُعَبُ الْاِیمَان | امام احمد بن حسین بیہقی متوفّٰی ۴۵۸ھ | دار الکتب العلمیۃ بیروت |
| (۱۱) | سنن نسائی | امام ابو عبد الرحمٰن احمد بن شعیب النسائی متوفّٰی ۳۰۳ھ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| (۱۲) | المعجم الصغیر | امام سلیمان بن احمد طبرانی متوفّٰی ۳۶۰ھ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| (۱۳) | مشکاۃ المصابیح | امام محمد بن عبد الرحمٰن الخطیب التبریزی متوفّٰی ۵۰۹ھ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| (۱۴) | جامع الصغیر | امام عبد الرحمٰن جلال الدین السیوطی متوفّٰی ۹۱۱ھ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| (۱۵) | فِردَوسُ الْاَخْبَار | حافظ شیرویہ بن شہردار دیلمی متوفّٰی ۵۰۹ھ | دار الفکر بیروت |
| (۱۶) | حلیۃ الاولیاء | ابو نعیم احمد بن عبد اللہ الاصفہانی متوفّٰی ۴۳۰ھ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| (۱۷) | کشف الخفاء | امام اسماعیل بن محمد العجلونی الشافعی متوفّٰی ۱۱۶۲ھ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| (۱۸) | اَلْکَامِلُ فِی ضُعَفَاءِ الرِّجَال | مام ابو احمد بن عبد اللہ بن عدی جرجانی متوفّٰی ۳۶۵ھ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| (۱۹) | فیض القدیر | علامہ عبد الرؤف المناوی متوفّٰی ۱۰۳۱ھ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| (۲۰) | اَلزَّوَاجِر | امام الشیخ ابن حجر مکی متوفّٰی ۹۷۴ھ | دار الحدیث قاھرہ |
| (۲۱) | تاریخ بغداد | الحافظ احمد بن علی الخطیب متوفّٰی ۴۶۳ھ | دار الکتب العلمیہ بیروت |
| (۲۲) | نُزْھَۃُ الْقَارِی | حضرت شریف الحق امجدی متوفّٰی ۱۴۲۱ھ | فرید بک |
| (۲۳) | مِرْاٰۃُ الْمَنَاجِیح | مفتی احمد یار خان نعیمی متوفّٰی ۱۳۹۱ھ | ضیاء القرآن |
| (۲۴) | اشعۃ اللمعات | شاہ عبد العزیز محدث دہلوی متوفّٰی ۱۲۳۹ھ | |
| (۲۵) | افضل الصلوات علی سید السادات | علامہ یوسف بن اسماعیل النبہانی متوفّٰی | دار الثمر عرفۃ |
| (۲۶) | مدارج النبوۃ | شاہ عبد العزیز محدث دہلوی متوفّٰی ۱۲۳۹ھ | مرکز اہلسنت برکات رضا گجرات |
| (۲۷) | فَتاوٰی رَضَوِیہ | اعلیٰحضرت امام احمد رضا متوفّٰی ۱۳۴۰ھ | رضا فاؤنڈیشن |
| (۲۸) | حاشیہ نور الایضاح | مولانا عبد الرزاق بھترالوی حطاروی | مکتبۃ ضیائیہ |
| (۲۹) | علم اور علماء | مفتی جلال الدین احمد امجدی متوفّٰی ۱۴۱۲ھ | سادات پبلی کیشنز |

ٱلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

# नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना जाएज़ा लेते हुए नेक आ'माल का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

**मेरा मदनी मक़्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ'' अपनी इस्लाह़ के लिये **''नेक आ'माल''** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **''मदनी क़ाफ़िलों''** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ